हिन्दू चेतना (पाक्षिक)
E-mail:hinduchetna.patrika@gmail.com

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
श्रीमद्भगवद्गीता	3
दिन दर्शिका	4
गंगा रक्षा- राष्ट्र रक्षा	5
स्वस्थ राष्ट्र, सुखमय राष्ट्र हिन्दुत्व में निहित है दुनिया की हर समस्या का समाधान	6
हिन्दू विरोधी राजनीति को समाधि देनी होगी	8
राजनीति के अनेक रंग	9
समाज धर्मयोद्धाओं के वंशजों का सम्मान करे	10
परस्पर सौहार्द और समरसता भारतीयो का मूल जैन समुदाय को अल्पसंख्यक दर्जा किसने कैसे थोपा?	11
दिल्ली के अनेकों जिलों में बजरंगियों ने ली त्रिशूल दीक्षा	12
भीष्म पितामह	16
इतालवी झूठ से संघ को घेरने की राष्ट्रघाती षडयंत्र	17
गृहस्थ आश्रम की नींव	20
1984 के दोषियों को दण्डित करो	22
ललकार	24
मैं भारत हूँ	24
लोकतंत्र पर मुस्लिम वोट बैंक भारी	25
विश्व में हिन्दुओं के विरुद्ध अनिष्टकारी षडयंत्र	25
	26

श्रीमद्भगवद्गीता

सप्तमोऽध्यायः

मय्यासक्तमनाः पार्थ योगं युञ्जन्मदाश्रयः।
असंशयं समग्रं मां यथा ज्ञास्यसि तच्छृणु॥१॥

श्रीभगवान् बोले- हे पार्थ! अनन्यप्रेम से मुझ मे आसक्त-मनवाला तथा पूर्ण रूप से मेरे आश्रित होकर योग में तत्पर होकर मुझको सम्पूर्ण विभूति, बल, ऐश्वर्यादि गुणों से युक्त, अर्थात् मेरे समग्र रूप को जिस प्रकार संशय रहित होकर तू जानेगा, उसको सुन।

दोहा

बोले प्रभु मन पूर्णतः, मुझ मे कर आसक्त।
मेरे आश्रित सर्वथा, और योग से युक्त।।
मेरे रूप समग्र को, निस्संदेह यथार्थ।
जान सके जिस भाँति से, वह अब सुन हे पार्थ।।

ज्ञानं तेऽहं सविज्ञानमिदं वक्ष्याम्यशेषतः।
यज्ज्ञात्वा नेह भूयोऽन्यज्ज्ञातव्यमवशिष्यते॥२॥

मैं तेरे लिये इस विज्ञानसहित तत्त्वज्ञान को सम्पूर्णरूप से कहूँगा, जिसको जानकर संसार में फिर और कुछ भी जानने योग्य शेष नहीं रह जाता है।

ज्ञान तुम्हारे लिये कहूँगा- और सहित विज्ञान कहूँगा लीला रूप अनन्त हमारे-समझा सकें न व्यक्ति बेचारे अतः स्वयं मैं समझाऊँगा-तत्त्व पूर्णतः बतलाऊँगा जब तू उसे जान जायेगा-यहाँ न कुछ ज्ञातव्य बचेगा

सुगम गीता व्याख्या पुस्तक से
लेखक - **श्री प्यारेलाल त्रिवेदी**
सी-2/53ए, लॉरेंस रोड, केशवपुरम्
दिल्ली-110035, दूर : 011-27192504

माघ शुक्ल पक्ष विक्रम संवत् २०७०
२ से १६ मार्च २०१४ ई. तक

सूर्य उत्तरायण शिशिर ऋतु

दिन	तिथि	नक्षत्र	प्रविष्टि सौर मास	दिनांक आंग्लमास	विशेष विवरण
रविवार	प्रतिपदा	पूर्वाभाद्रपद	१६	2	
सोमवार	द्वितीया	उत्तराभाद्रपद	२०	3	फुलेरा दूज, श्री राम कृष्णपरमहंस जयंती
सोमवार	तृतीया	0	०	0	क्षय
मंगलवार	चतुर्थी	रेवती	२१	4	पंचक समाप्त
बुधवार	पंचमी	अश्विनी	२२	5	याज्ञवल्क्य जयंती
गुरुवार	षष्ठी	भरणी	२३	6	
शुक्रवार	सप्तमी	कृतिका	२४	7	
शनिवार	अष्टमी	रोहिणी	२५	8	होलाष्टक प्रारंभ, अन्नपूर्णा अष्टमी, महिला दिवस
सोमवार	नवमी	आर्द्रा	२७	10	
मंगलवार	दशमी	पुनर्वसु	२८	11	
बुधवार	एकादशी	पुष्य	२९	12	आमलकी एकादशी व्रत
गुरुवार	द्वादशी	श्लेषा	३०	13	
शुक्रवार	त्रयोदशी	श्लेषा	१ चैत्र	14	संक्रान्ति, प्रदोष व्रत
शनिवार	चतुर्दशी	मघा	२	15	
सोमवार	पूर्णिमा	पूर्वा फाल्गुनी	३	16	होलिका दहन, होलाष्टक समाप्त, चैतन्य महाप्रभु जयन्ती, सत्यव्रत पूर्णिमा

भुजालम्बं केचिद्ददति जलमग्नाय जनुषे नयन्त्यन्ये शिल्पैस्तरणिमिह भग्नां सुनवताम्।
यदेतान् कल्लोलान् गिरिसमशिखान्नोकयसि नः चमत्कारः सोऽयं तव निपुणवाचो न विषमः॥३५॥

इस विषम परिस्थिति में पानी में डूबने वालों को कुछ लोग हाथ का सहारा दे रहे हैं। अन्य कुछ लोग अच्छे शिल्प से टूटी हुई नौकाा को ठीक कर रहे हैं, किन्तु हे परमदयालु-प्रभो! आप तो पर्वत सदृश इन ऊंची लहरों को ही हमारे लिये नौका बना देते हैं। यह तो आप का चमत्कार ही है। वाणी के धनी भी इसका वर्णन नहीं कर सकते।

नभस्तेजो लब्ध्वा जयमिदमनीकञ्च मरुताम् मुदालिङ्गद् भूमेः कुसुमसुभगं मण्डलमिदम्।
मनोऽस्माकं ब्रह्मँस्त्वयि निहितभारं पुलकितम् वसन्ते सम्प्राप्ते नटतु सकला क्लीबपरिषत्॥३६॥

अब तो आकाश निर्मल तेज से विभासित हो रहा है और मरुत् (पवनदेव) की सेनाएं समस्त भुवनों को विजित करके कुसुमों से सुशोभित भूमण्डल को आनन्द से आलिङ्गन कर रही है। इस मधुमय मुहूर्त्त में हे ब्रह्मन्! हमारा मन आपके चरणों में ध्यानमग्न होने से परमानन्द से पुलकित हो रहा है। वसन्त के आगमन से हे प्रभो!न केवल चेतन, अपितु सारी की सारी जड़ प्रकृति आनन्द से झूम उठती है।

-पूज्य स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती प्रणीत, भक्तिलहरी

गंगा रक्षा- राष्ट्र रक्षा

9 फरवरी 2014 को कांची कामकोटीश्वर मंदिर, हनुमान घाट, वाराणसी में अरुंधती वशिष्ठ अनुसंधान पीठ द्वारा "गंगा रक्षा-राष्ट्र रक्षा" के विषय में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। गंगा रक्षा के विषय में निम्न संस्तुतियाँ की गई-

1. गंगा का न्यूनतम अविरल प्रवाह सुनिश्चित किया जाये। 2. गंगा की शुद्धता के लिए गंगा में मिलने वाले अनगिनत कणों (Sediment) का अविरल प्रवाह होना चाहिए, क्योंकि जीवाणुभोजी (Bacteriophages) उन्हीं के आधार पर रहते हैं। 3. सीवर में रसायन न डाला जाये तथा भारी तत्वों (Heavy Metals) के परिशोधन के लिए विशेष उपाय किये जायें। 4. नगरों के प्रदूषित जल को शुद्ध करके सिंचाई के लिए प्रयोग किया जाये। 5. कारखानों के रसायन तथा अस्पतालों के कचरे को गंगा में डालने से रोका जाये। 6. राष्ट्रीय नदी गंगा की रक्षा के लिए राष्ट्रीय कठोर कानून बनाया जाये, जिसका जिला प्रशासन के द्वारा दृढ़ता से पालन हो। 7. गंगा के उद्गम से लेकर गंगा सागर तक स्थान-स्थान पर गंगा रक्षा चौकियाँ बने, जो गंगा में बहने वाले कचरों, माला-पुष्प, शव, प्लास्टिक को निकालने का कार्य करें। 8. नगरों में स्नान घाटों पर गंगा रक्षा चौकियाँ बने जो साबुन आदि लगाने, कपड़े धोने आदि को तीर्थ पुरोहितों एवं स्थानीय लोगों के सहयोग से रोकने का कार्य करें। 9. गंगा को रक्षा के लिए नागरिक चेतना का विकास किया जाये तथा नागरिकों द्वारा गंगा में माला-पुष्प, कपड़े, शव आदि न डाला जाये इसका प्रयास हो। 10.गंगा तल में बढ़ते सिल्ट का अध्ययन हो व उसे रोकने का उपाय तथा वर्षा काल में ड्रेजिंग हो। 11.गंगा के जीवाणुभोजी पर शोध हो। 12.हानिकारक रसायन की जानकारी डिब्बों पर हिन्दी में दी जाये। 13. गंगा की सहायक नदियों के तल को गहरा करने का प्रयास किया जाये। 14. ट्रीटमेंट प्लांटों को निरंतर विद्युत आपूर्ति हो और प्लांट निरंतर चलें।

इस कार्यक्रम में श्री अशोक सिंहल संरक्षक विहिप तथा संस्थापक न्यासी अरुंधती वशिष्ठ अनुसंधान पीठ, प्रमुख विषय विशेषज्ञ एवं वक्ता प्रो. तपन चक्रवर्ती पूर्व निदेशक राष्ट्रीय पर्यावरण अभियांत्रिकी शोध संस्थान एन. ई.ईआर.आई., प्रो. एस.एन. उपाध्याय पूर्व निदेशक, भारतीय

प्रौद्योगिकी संस्थान, आई.आई.टी. बी.एच.यू., प्रो. पी. के. मिश्र रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग बी.एच.यू.।, प्रो. आर.सी. तिवारी कृषि संस्थान, बी.एच.यू. प्रो. हरिकेश बहादुर सिंह कृषि संस्थान, बी.एच.यू., प्रो. ओम प्रकाश सिंह पत्रकारिता विभाग काशी विद्यापीठ, डा. पवित्र मैती सिविल इंजिनीयरिंग विभाग, बी.एच.यू. प्रो. जय प्रकाश लाल कृषि संस्थान, बी.एच.यू., प्रो. देवेन्द्र प्रताप सिंह खनन अभियांत्रिकी विभाग, बी.एच.यू, डॉ. भक्तिपुत्र रोहितम वेद विभाग काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, प्रो. राजेन्द्र सिंह मनोविज्ञान विभाग एम.जी.के.वी. उपस्थित थे। ❑

माँ झण्डेवाली देवी का संकीर्तन छप्पनभोग अर्पण

नई दिल्ली फरवरी 24, 2014। विगत 30 वर्षों से मोहनदुर्गा संकीर्तन मण्डल द्वारा यह कार्यक्रम सम्पन्न हो रहा है। मोहन मण्डल के अतिरिक्त सेवादारों, श्री लवकुश पार्टी, श्री सुनील चावला पार्टी संकीर्तन तथा माँ का गुणगान किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विश्व हिन्दू परिषद के संरक्षक एवं न्यासी श्री ब.भ.झ.टे. सोसाइटी **श्री अशोक सिंहल** ने माँ के दर्शन और आशिर्वाद लेने के पश्चात् सभी मण्डली की ओर से सम्मानित किया गया। भक्त मण्डली को सम्बोधित करते हुए कहा- विधर्मियों के चंगुल से माता मन्दिर और परिसर को मुक्त कराया गया उसके पश्चात् ही श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर विधर्मियों से मुक्त हुआ। आज झंडेवाली माता की प्रसिद्धि विदेशों में भी है। भारत माँ की सन्तान होने के कारण हम विधर्मियों के षड्यंत्रों का विरोध कर अपने मन्दिरों की सुरक्षा की व्यवस्था करें। मन्दिर के पदाधिकारी रात-दिन मन्दिर के विकास और विस्तार में जुटे हैं। इस कार्यक्रम में उपस्थित होने से मुझे प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। अतः सभी को हार्दिक अभिनन्दन। ❑

स्वस्थ राष्ट्र, सुखमय राष्ट्र

भाग्यनगर (हैदराबाद), 16 फरवरी , 2014। भारत में जिस की आवश्यकता थी, ऐसी **इंडिया हेल्थ लाईन** अब आरम्भ हो गयी है। गरीब, मध्यमवर्ग के, जरूरतमंद आम लोग कई बार पास वाले जी पी डॉक्टर को दिखाने के बाद उन के कहने के बावजूद भी विशेषज्ञ (स्पेशलिस्ट) डॉक्टर को दिखाने जाते ही नहीं क्योंकि भारत की असीम गरीबी। उन्हें डर लगता है कि आगे जाँच कराने के खर्चे बहुत होंगे और फिर कुछ गम्भीर बीमारी निकली तो उस के उपचारों का बोझ। कई बार केवल अज्ञान और समय का अभाव इन कारणों से भी आम लोग आगे विशेष जाँच कराने जाते नहीं। इस कारण जो रोग प्रारम्भ में उपचार मिलते तो ठीक हो सकता अधिक गम्भीर हो जाता है, खर्चे बढ़ते हैं, प्राण तक जा सकते हैं और हमारे राष्ट्र के बहुमूल्य कार्य का समय भी व्यय होता है।

इंडिया हेल्थ लाईन का हैदराबाद में उदघाटन करते हुए जाने माने कैंसर सर्जन और विश्व हिन्दू परिषद के अंतर्राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष डॉ. प्रवीण तोगड़िया जी ने कहा, ''इंडिया हेल्थ लाईन'' अब आम लोगों के लिए ''भारत के आरोग्य की अमृत धारा'' के रूप में आयी है। इंडिया हेल्थ लाइन के राष्ट्रीय कौल सेंटर पर एक कौल करने से आम लोगों को स्पेशलिस्ट डॉक्टर्स की अपॉइंटमेंट दी जायेगी, वे मुफ्त सलाह देकर जाँच कराएंगे। इस हेतु इंडिया हेल्थ लाईन से देशभर से हजारों स्पेशलिस्ट डॉक्टर्स जुड़ रहे हैं। उस के आगे खून की जाँच/एक्सरे / एम आर आई /सी टी स्कान आदि मामूली खर्चे में हो इस हेतु हजारो ऐसे स्पेशलिस्ट केंद्र भी जुड़ चुके हैं। हजारों अस्पताल आगे के उपचारों के लिए तैयार हैं। हजारों दवा दुकानें / रुग्णवाहिका / रक्तपेटियां आदि भी इंडिया हेल्थ लाईन से शामिल गए हैं। अब आम लोगों को स्पेशलिस्ट डॉक्टरों से मिलने में डरने की नौबत नहीं आएगी, समय पर सलाह मिलने से प्राण, समय और खर्चे भी बचेंगे। भारत का आरोग्य हमारी सभी की जिम्मेदारी है। बस, इंडिया हेल्थ लाईन के कौल सेंटर पर एक कौल कर आगे की सेवायें मिल पायेगी। यह सेवा रोजमर्रा के बुखार, गिरने / कटने से होने वाली रोज की छोटी जख्में इनके लिए नहीं। इस हेतु आस-पास के जी पी डॉक्टर्स बेहतर उपचार देते हैं। लेकिन उन्ही डॉक्टरों ने अगर आगे स्पेशलिस्ट डॉक्टरों को दिखाने के लिए कहा है और दर, खर्चे इस के कारण यह नहीं हो रहा हो, तो इंडिया हेल्थ लाईन का नंबर मिलाइये। इस सेवा में कैंसर सर्जन, न्यूरो सर्जन, हड्डी के सर्जन, महिला रोगों के स्पेशलिस्ट डॉक्टर्स, किडनी के स्पेशलिस्ट डॉक्टर्स, बॉलरों/मानसिक रोग/ त्वचा रोग आदि सभी और अन्य अनेक विषयों के स्पेशलिस्ट डॉक्टर्स जुड़े हैं। इसीलिए अब 'स्वस्थ राष्ट्र, सुखमय राष्ट्र'। इंडिया हेल्थ लाईन से आम लोग भी सेवा हेतु जुड़ सकते हैं- आय एच एल आरोग्य सेवक बनकर। इस के लिए मेडिकल ज्ञान की आवश्यकता नहीं। रोगी/उनका परिवार और स्पेशलिस्ट डॉक्टर्स इन के साथ समन्वय कराना होगा और इस हेतु इंडिया हेल्थ लाईन खास प्रशिक्षण भी देगी। भारत को स्वस्थ बनाना हम सभी का उत्तरदायित्व है।''

इंडिया हेल्थ लाइन का कौल सेंटर नंबर : 18602333666 Web : www-indiahealth@gmail.com

इंडिया हेल्थ लाईन के राष्ट्रीय सलाहकार हैं-**डॉ जितेन्द्र पटेल** (एम् एस-ओर्थो और इंडियन मेडिकल असोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष), **डॉ. गिरीश कुमार सिंह** (पटना-AIIMS के निदेशक), जाने माने **कैंसर**

शेष पृष्ठ 7 पर....

हिन्दुत्व में निहित है दुनिया की हर समस्या का समाधान

-चम्पत राय, अन्तर्राष्ट्रीय महामंत्री, विहिप

नई दिल्ली फरवरी 18, 2014। विश्व की हर समस्या का समाधान हिन्दुत्व में निहित है। विश्व हिन्दू परिषद के अंतर्राष्ट्रीय महामंत्री श्री चंपत राय ने कहा कि चहुँ ओर विविध प्रकार की समस्याओं से भयाक्रांत विश्व को यदि सरल, सुमंगलकारी विकास की ओर लौटना है तो हिन्दुत्व को अपनाना होगा। हिन्दुत्व निष्ठ जीवन पद्धति जिसमें **'मातृवत् परदारेषु, परद्रव्येषु लोष्ठवत्, आत्मवत् सर्व भूतेषु'** का आदर्श निहित है तथा 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः' का भाव समाहित है, इसके द्वारा ही दुनिया को सच्चे विकास की ओर लौटाया जा सकता है। दक्षिणी दिल्ली के संत नगर स्थित आर्य समाज मन्दिर में आयोजित धर्म रक्षा निधि अर्पण कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि इसके लिए वास्तव में हिन्दू जीवन पद्धति, जिसमें बालिका-महिला को माँ का महान दर्जा दिया गया है, पर-स्त्री व पराई सम्पत्ति पर दृष्टि डालना निषेध है, तथा विश्व के प्रत्येक प्राणी मात्र के कल्याण की बात कही गई है।

मात्र कानून बना देने या राजनैतिक वक्तव्य देने भर से भ्रष्टाचार व महिला उत्पीडन जैसी बीमारियों से छुटकारा नहीं दिलाया जा सकता है। इसके लिए विहिप द्वारा प्रारम्भ किया गया जन-जन में संस्कारों का विकास, अस्पृश्यता का नाश और धार्मिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों का सृजनकारी अभियान मील का पत्थर सिद्ध होगा। कार्यक्रम का समापन वन्दे-मातरम् के गान से हुआ।

विश्व हिन्दू परिषद के अमर कालोनी प्रखण्ड द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में विहिप के प्रान्त मंत्री श्री विजय गुप्ता, जिला उपाध्यक्ष श्री अनिल चतुर्वेदी, जिला मंत्री श्री अजय कुमार, जिले के बजरंगदल सह संयोजक श्री राकेश पाण्डे, स्थानीय निगम पार्षद श्री के. सी. तनेजा, संत नगर रेजीडेण्ट वेल्फेयर एसोशिएशन के महामंत्री श्री सन्नी पुरेवाल, सनातन धर्म मन्दिर समिति के श्रीयुत् श्रीनिवास वशिष्ठ, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह नगर कार्यवाह श्री दिनेश अग्रवाल, श्री प्रकाश मिश्र, श्री संजय, श्री मृत्युन्जय व श्री सुशील मिश्र, आर्य समाज मंदिर के कोषाध्यक्ष श्री वीरेन्द्र सूद, सह कोषाध्यक्ष श्री विनोद कौशिक, संरक्षक श्री जगदीश गांधी व श्रीमती विमलेश आर्या, प्रतिभा, कल्पना, गुरमीत कौर, राज सूद, छाया तिवारी सहित गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी तथा सीनियर सिटीजन वेल्फेयर एशोसिएशन के पदाधिकारी उपस्थित थे।

प्रेषक : **विनोद बंसल**
मीडिया प्रमुख, इन्द्रप्रस्थ, विहिप

.....पृष्ठ 6 का शेष

सर्जन डॉ प्रवीण तोगड़िया। प्रमुख अतिथि और कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री राघव जी रेड्डी, अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष - विश्व हिन्दू परिषद्।

इंडिया हेल्थ लाईन : स्वस्थ राष्ट्र, सुखमय राष्ट्र।

संपर्कः डॉ. प्रवीणभाई तोगडिया
09825323406

हिन्दू विरोधी राजनीति को समाधि देनी होगी

-डा. सुरेन्द्र जैन, प्रवक्ता, विहिप

हिसार। देश को विभाजित करने वाली हिन्दू विरोधी शक्तियों को परास्त कर देश में हिन्दू राजनीति को खडा करना है। हर हिन्दू को वोट बनवाना चाहिए और देश हित में हर हिन्दू को वोट डालना चाहिए। हिन्दू विरोधी राजनीति को समाधि देने का समय आ गया है। हमे हवा नहीं तूफान खड़ा करना है। यह विचार विश्व हिन्दू परिषद के केन्द्रीय मंत्री डा सुरेन्द्र जैन ने रविवार स्थानीय देवी भवन में आयोजित विश्व हिन्दू परिषद की प्रांतीय कार्यसमिति को सम्बोधित करते हुए कहा। अयोध्या में भगवान श्रीराम के भव्य मंदिर का निर्माण न तो किसी एक व्यक्ति और न ही किसी राजनैतिक दल के द्वारा होगा, वह तो सम्पूर्ण हिन्दू समाज की शक्ति के बल पर बनेगा। डा. सुरेन्द्र जैन ने आरोप लगाया कि केन्द्र सरकार नए नए अल्पसंख्यक घोषित कर हिन्दू समाज को तोड़ने का षडयंत्र रच रही है। जबकि सर्वोच्चन्यायालय ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि देश में अल्पसंख्यकवाद बंद होना चाहिए। जो कार्य देश के सत्ता में बैठे राजनेताओं को करना चाहिए वह कार्य देश के न्यायाधीश कर रहे हैं।

धर्मनिरपेक्षता के नाम पर हिन्दुओं को निशाना बनाया जा रहा है उनके घरों को जलाया जा रहा है उस पर अत्याचार किया जा रहा है। यदि गोधरा नहीं होता तो धर्मनिरपेक्षता का तानाबाना नहीं टूटता, देश की वर्तमान सरकार को किश्तवाड़ में हिन्दुओं पर हुए हमले दिखाई नहीं देते, मुजफ्फरनगर, कोकराझार के दगें दिखाई नहीं देते तब धर्मनिपरेक्षता का तानाबाना नहीं टूटता। उन्हें केवल मुस्लमानों की सुरक्षा दिखाई देती है। सरकार साम्प्रदायिक व लक्षित हिंसा रोकधाम अधिनियम के द्वारा हिन्दुओं के सुरक्षा के अधिकारों को भी छीन रही है। हिन्दुओं की सुरक्षा की कोई चिंता नहीं कर रहा। डा. सुरेन्द्र जैन ने विहिप के कार्य विस्तार की आवश्यकता पर जोर दिया।

प्रदेश कार्य समिति की बैठक का शुभारम्भ स्वामी दिव्यानन्द, विहिप के क्षेत्रीय संगठनमंत्री श्री करूणा प्रकाश, प्रांतीय अध्यक्ष कांतिलाल सैनी, मंत्री प्रद्युम्न शर्मा ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। इस अवसर पर आचार्य सन्तोष शास्त्री व किशोर शुक्ला ने मंगलाचरण व शंख नाद किया। विहिप के प्रांतीय प्रवक्ता विजय शर्मा ने बताया कि इस बैठक में हरियाणा प्रदेश के विहिप के सभी 21 जिलों से 140 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस अवसर पर भारतीय जीवनमूल्यों की पुनर्प्रतिष्ठा, तिरूपति में खुलने वाले इस्लामिक विश्व विद्यालय के विरोध में, मठमंदिरों की व्यवस्था, भारत में जनसंख्या असंतुलन, विदेशी घुसपैठ, समान नागरिक संहिता व हिन्दुओं के धर्मान्तरण आदि विषयों पर प्रस्ताव पारित किए गए। उन्होनें बताया कि विश्व हिन्दू परिषद हरियाणा 31 मार्च से पूर्ण प्रदेश में एक हजार समितियों का गठन किया जाएगा। स्वर्ण जयंती वर्ष को लेकर पूरे भारत के अधिकांश गावों, प्रखंडों व जिलों में हिन्दुओं में आत्मविश्वास जगाने वाले कार्यक्रमों की रचना की जाएगी। बैठक में नए पुराने कार्यकर्ताओं को आह्वान कर विहिप के कार्य विस्तार की व्यापक योजना तैयार की जाएगी। इस अवसर पर विहिप के विभाग मंत्री अनिल गोयल, विभाग अध्यक्ष सुभाष जैन एडवोकेट, जिला अध्यक्ष विश्वनाथ जी, जिला मंत्री रविन्द्र गोयल, जिला संयोजक कपिल वत्स, ओम प्रकाश फोगाट, कृष्ण भारती, मुनिष जैन, विनोद कांसल, सुशील वधवा, सतपाल मधु, दयाप्रकाश सराफ, धर्मपाल सोनी, सौरभ, संजय सूरा आदि ने प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया।

प्रेषक : **विजय शर्मा**, प्रांतीय प्रवक्ता, हिसार

राजनीति के अनेक रंग

- धर्मनारायण शर्मा, केन्द्रीय मंत्री, विहिप

वर्तमान देश का राजनीतिक दृश्य कुछ ज्यादा ही पेचिदा बनता जा रहा है। सत्तारूढ़ कांग्रेस ने भ्रष्टाचार का जो विक्रम बनाया है वह भारत के इतिहास की एक बेजोड़ घटना है। केन्द्र सरकार के काफी मंत्री भ्रष्टाचार करने की चपेट में आए हैं। यहाँ तक की प्रधानमंत्री भी इस कृत्य में अछूते नहीं रहे हैं। इतना सब होने पर भी कांग्रेस अपने व अपने साथ के भ्रष्टों को बचाने में लगी हुई है। अपनी लूट की अकूत सम्पदा को लेकर जनभाव को भी गुमराह करने का भरसक प्रयत्न कर रही है। अपने धूमिल चेहरों को चमकदार बनाने के लिए भी कुछ फैशनेबल कम्पनियों को ठेका देने में लगी हैं। लोगों का मानना है कि पिछले कुछ वर्षों से कांग्रेस की सरकारें ठेके व कमीशन से ही पार्टी को मालामाल कर रही हैं। केन्द्रीय सरकार का संचालन दो केन्द्रों से चलता रहा, जिसे अभी-अभी प्रधानमंत्री श्री मनमोहन सिंह ने स्वीकारा है। सरकार के दो केन्द्र तभी बन सकते हैं जबकि सरकार का प्रधान नकारा बन जाए। यही हुआ है वर्तमान प्रधानमंत्री के द्वारा दस जनपथ में बैठी सोनिया जी आज भी रोमनभाषा में लिखे गए भाषण बोल रही हैं। मौलिकता का अभाव तो है ही साथ ही भारतीयता का सटीक ज्ञान भी नहीं है परन्तु सरकार पर हावी अवश्य है। इन दोनों केन्द्रों ने मिलकर भारतीय जनता को महंगाई की भट्ठी में झोंक दिया है। इतना सब होने के पश्चात भी जनता का शोषण बन्द करने को तैयार नहीं हैं। इस त्रस्त जनता को गुमराह करते हुए मंहगाई के दानव को क्रमशः बलवान बनाया जा रहा है। तैल कम्पनियां घाटे-घाटे की चीख निकालती हैं तो ये तुरन्त मंहगाई का शोटा जनता पर जड़ देते हैं। जनता चीखती है तो जनता को अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति की याद दिलाकर चुप कर देती हैं। कंपनियां खुश और कांग्रेस पार्टी खुश, यही लेन-देन का सौदा लम्बे काल से चल रहा है।

जनता ही नहीं देश की सीमा भी सुरक्षित नहीं है। पिद्दी सा पाकिस्तान आए दिन गोलियाँ दाग रहा है। सिर काट कर ले जाता है और जेहादियों को शस्त्र सज्जित कर भारत-कश्मीर भेज रहा है। हम विरोध में सैनिक बैठकें करके विषय को दबाते जा रहे हैं, इससे धूर्त पाकिस्तान की हिम्मत बढती जा रही है। जेहादी यहाँ आए दिन धमाका करके जनहानि कर रहे हैं। यही कृत्य चीन भी कर रहा है। कभी-कभी चीन के सैनिक मीलों तक हमारी सीमा में घुसकर सेना-जनता को धमका कर दो-चार दिन बाद वापिस चले जाते हैं। इस पर भारत की कांग्रेस या यूपीए सरकार अपनी विजय मानकर सफलता के लडडू फोड़ने लगती है।

जनता को भ्रष्टाचार ने मारा, मंहगाई ने मारा व सरकार ने भी शोषण द्वारा मारा। क्या किसी को अफसोस है? अफसोस किस बात का अफसोस? भ्रष्टाचार तो अन्तर्राष्ट्रीय है, इसका अफसोस क्यों कर करना? यह कथन है आज की सरकार के मंत्रियों का। जनता ठगी सी खडी है किसी को इस जनता से सहानुभूति नहीं है। जनता केवल वोटर है और वोट मिलते हैं नोट (रूपये) से और गोट से। सब कुछ आता है कांग्रेस और राजनैतिक दलों को। राजनीति रंगरंगीली है और जब चुनाव का काल आता है तो चुनाव की मादा गर्भिणी बन संतानरूपी किसी नए दलों को जन्म देती है। एक दल अभी-अभी पैदा हुआ, जिसका नामकरण 'आप पार्टी' रखा गया। इस दल ने पैदा होते ही मायावी रूप से आम जनता को मायाग्रसित कर अपना स्थान बनाया है। पुराणों में भी मायावियों का वर्णन आता है। बड़े-बड़े धुरंधर भी माया को जान नहीं सके हैं और उसके चक्कर में चक्कर खाते रहे हैं।

इस आप पार्टी ने त्याग, ईमानदारी का मायावी रूप धारण कर आम जन को अपना शिकार बना लिया है।

आप पार्टी वाले कौन हैं और एकदम इनका प्रकटीकरण कैसे हुआ? यह भी एक रहस्य है। सुना जा रहा है इन्हें विदेशी कंपनियाँ धन दे रही हैं और इनके प्रचार की विशिष्ट जिम्मेदारी भी उठा रही हैं। इनकी पार्टी का प्रचार, मीडिया और चैनलों द्वारा तेजी से चल रहा है। कुछ लोगों की शंका है कि मीडिया व चैनलों को पर्याप्त धनराशि मिल गई है इसलिए चैनलों में केजरीवाल के चेहरे व कार्यकलापों को विशेषरूप से उभारा जा रहा है और प्रशंसा की जा रही है। अभी तक तो जनता इन्हें जान नहीं पाई है परन्तु डूबती कम्युनिस्ट पाटियाँ व उनके समर्थकों ने इस आप पार्टी की प्रशंसा ही करना आरंभ नहीं किया है बल्कि उनके सदस्य बनना भी आरंभ कर दिया है। कुछ जानकारों का मत यह है कि केजरीवाल और उसके साथी नक्सली आंदोलन के समर्थक हैं। अब नक्सली एक पार्टी का मायावी रूप धारण कर दिल्ली की गद्दी पर काबिज होने के लिए प्रयत्नशील हैं।

अमेरिका व पश्चिमी देश व मुस्लिम राष्ट्र नहीं चाहते कि भारत की सत्ता पर कोई राष्ट्रवादी बैठे। वे तो उसे चाहते हैं जो हमारी योजनाओं को साकार करे। नरेन्द्र मोदी को वे हिन्दूवादी, राष्ट्रवादी मानते हैं। उन्हें मालूम है कि मोदी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का स्वयंसेवक व प्रचारक रहा है। वे जानते हैं कि यदि राष्ट्रवादी दमदार नेता भारत का प्रधान बन गया तो भारत संसार का सर्वश्रेष्ठ बनकर विश्व का श्रेष्ठतम राष्ट्र बन जायेगा। अमेरिका ने विश्व में अपनी दादागिरी चला रखी है। वह विश्व का एकमात्र श्रेष्ठ रहने के लिए मोदी को रोकने हेतु भारत में धन फेंककर आप जैसी पार्टी द्वारा राष्ट्रवाद का मार्ग रूद्ध करने के लिए प्रयत्नशील है।

अब प्रश्न भारत के उठने का है। जनता सत्य, असत्य को कैसे जाने यह विषय है? पश्चिम व मुस्लिम राष्ट्रों ने तो अपनी धूर्त चाल चल दी है। इस चाल को कांग्रेस जानकर भी कुछ नहीं कर सकती क्योंकि कांग्रेस नेतृत्व, मुस्लिम व अमेरिका को नकार नहीं सकता। भारत में अन्य दल उनमें से कुछ तो प्रांतीय मात्र हैं और कुछ अन्तिम यात्रा की दिशा में हैं। केवल और केवल भारतीय जनता पार्टी ही राष्ट्रवादी पार्टी है, उसी से भारत की रक्षा, समृद्धि की आशा, अपेक्षा की जा सकती है। आज पार्टी के पास सशक्त नेतृत्व है, राष्ट्रव्यापी संगठन है और है राष्ट्रवादी एकात्मवादी वैचारिक भावभूमि। इस दल के पास शिक्षाशास्त्री, अर्थशास्त्री व कुशल प्रशासक भी हैं। यह दल ही भारत को उठायेगा और भारतीय मूल्यों व मानबिन्दुओं को बचायेगा।

अब बारी है जनता की, देश भक्तों की। वे घर-घर जाकर जनमन को जगाएं, उसे आगाह करें और मायावी दलों तथा विदेशी धन लेकर भारत में आतंक निर्माण करने वाली मनोवृत्तियों को व दलों को पराभूत करने का संकल्प कराएं तभी और तभी भारत जीतेगा, देश जीतेगा और सुविकसित भारत विश्व के सामने प्रकट हो सकेगा। ❑

समाज धर्मयोद्धाओं के वंशजों का सम्मान करे

रोहतक (हरियाणा)। अखिल भारतीय सामाजिक समरसता बैठक दिनांक 7, 8, 9 फरवरी, 2014 को सम्पन हुई। जिसमें देशभर से 25 प्रान्तों से 67 प्रतिनिधि उपस्थित थे। विश्व हिन्दू परिषद के संगठन महामंत्री श्री दिनेशचन्द जी ने बैठक का उद्घाटन करते हुए समरसता के व्यापक संदर्भ में कार्यकर्ताओं की भूमिका का वर्णन किया।

केन्द्रीय संयुक्त महामंत्री श्री विनायक राव देशपाण्डे ने देश की वर्तमान परिस्थितियों का वर्णन करते हुए कहा कि जिनको हम आज दलित कहते हैं वास्तव में उन्हीं के पूर्वजों ने धर्म की रक्षा के लिए संघर्ष किया था। अत: समाज को अपने इन धर्मयोद्धाओं के वंशजों का सम्मान करना चाहिए।

स्वामी दिव्यानन्द, डॉ. प्रवीण भाई तोगड़िया कार्याध्यक्ष विहिप, डॉ. सुरेन्द्र जैन केन्द्रीय मंत्री विहिप, श्री देवजी भाई रावत केन्दीय मंत्री विहिप आदि ने भी कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन किया। बैठक में विषमता और छुआछूत को समाप्त करने के लिए एक करोड़ दलित परिवारों से सम्पर्क करने का अभियान चलाकर, उनके स्वाभिमान को जगाकर परिवर्तन लाते हुए एकरस समाज निर्माण करने का संकल्प किया गया।

प्रेषक : **देवजी भाई रावत**
केन्द्रीय मंत्री, विहिप

परस्पर सौहार्द और समरसता भारतीयो का मूल

-स्वामी अखिलेश्वरानन्द गिरी, जबलपुर

किसी राष्ट्र की सुरक्षा के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि उस राष्ट्र बहुसंख्यक सुरक्षित व शक्तिशाली हों। यदि बहुसंख्यक दुर्बल हो गये तो उस राष्ट्र का लोकतंत्र तथा वह राष्ट्र भी शक्तिहीन हो जाएगा। अमरीका, यूरोप इत्यादि देश, जहाँ बहुसंख्यकों का ही शासन है और वहाँ पूर्णत: शक्ति व समृद्धि है। लेकिन बहुसंख्यक हिन्दू समाज को नष्ट करके भारत देश को गुलाम बनाने के लिए विदेशी शक्तियाँ आज भारत की देश विरोधी संक्यूलर शक्तियों के साथ मिलकर निरंतर कई षडयंत्र कर रही हैं। ये षडयंत्र जिहादी आतंकवाद से भी अधिक खतरनाक हैं।

अपने तुच्छ राजनीतिक स्वार्थ के लिए स्वार्थी सेक्युरलरवादी नेताओं ने 90 करोड़ हिन्दुओं के साथ विश्वासघात करके देश को पवित्र हिन्दू राष्ट्र बनाने की अपेक्षा एक अपिवत्र, धर्महीन, चरित्रहीन सेक्युलर धर्मशाला बना दिया है। जहाँ बहुसंख्यक हिन्दू द्वितीय श्रेणी के नागरिक हो गए हैं। दिन-प्रतिदिन उनके धार्मिक, लोकतांत्रिक व मानवाधिकार कुचले जा रहे हैं।

कश्मीर में हिन्दुओं पर इतना भयंकर अत्याचार किया गया, जितना हिटलर ने यहूदियों पर भी नहीं किया था पर संयुक्त राष्ट्र तक ने कश्मीर शरणार्थियों की कोई सहायता नहीं की। भारत में हिन्दुओं के विरुद्ध यह षडयंत्र कई प्रकार से चल रहा है। सबसे पहला तो राजनैतिक षडयंत्र, जिसके कारण देश के कई प्रांतों में ईसाई मुख्यमंत्री हैं तथा देश के अधिकतर महत्त्वपूर्ण पदें पर ईसाइयों को बैठाया गया है ताकि पोप के आदेशानुसार भविष्य में भारत को एक ईसाई बहुल स्थान बनाया जा सके। इसी तरह मुसलमान भी सेक्युलरवादी नेताओं से चुनाव के समय ऐसी शर्ते मनवाते हैं जो कि केवल उनके हित में होती है और हिन्दुओं के विरुद्ध इसे मुस्लिम तुष्टिकरण की हद ही कहेंगे कि बांग्लादेश से आये दिन हजारों घुसपैठियों को उनके वोट के लिए स्वागत के साथ भारत आने दिया जा रहा है, जो देश में आतंकवाद व निर्धनता बढ़ा रहे हैं, जबकि बांग्लादेश में हिन्दुओं को मुसलमान चुन-चुनकर मार रहे हैं। अपने ही देश के साथ इतना बड़ा विश्वासघात संसार में कहीं भी नहीं है।

दूसरी ओर सभी कानून हिन्दू धर्म के विरुद्ध बना कर हिन्दू धर्म को नष्ट करने का भी गहरा षड्यंत्र प्रगति पर है। विदेशों से अपार धन भारत में आ रहा है, जिससे लाखों हिन्दुओं का इस्लाम और ईसाइयत में लालच देकर या फिर जबरन मत परिवर्तन कराया जा रहा है। मुसलमान और ईसाइयों के प्रति बढ़ती उनकी प्रेम भावना का ही उदाहरण है कि दक्षिण में मन्दिरों की सैकड़ों करोड़ की जमीन ईसाइयों में बांट दी गई, वहाँ के मन्दिरों की करोड़ों की आमदनी को भी सरकार ने अपने अधिकार में ले लिया है। इस पैसे का उपयोग वहाँ की सरकारें इन उन्मादियों को पालने और पोसने पर खर्च कर रही हैं। इसी तरह देश के अन्य प्रांतों में भी यह दुष्चक्र चल रहा है। ऐसा अन्याय और अपमान संसार की किसी भी जाति पर नहीं होता देखा गया होगा।

मुस्लिम तुष्टिकरण के कारण सेक्युलर प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह कहते हैं कि मुसलमान गरीब हैं अत: देश की आमदनी का पहला अधिकार मुसलमानों का है, जबकि पहले से ही उनको अनेक प्रकार की सुख-सुविधायें मिल रही हैं, लेकिन हिन्दुओं के दुख और सुख से किसी भी पार्टी या राजनेता को कोई मतलब नहीं है। इस तरह हिन्दुओं को चारों तरफ से लूटकर अपना मुस्लिम और ईसाई वोट बैंक बनाया जा रहा है। प्रश्न यह है कि आज हिन्दू समाज का पतन क्यों हो रहा है? भारत में जहाँ हिन्दू आबादी का 84 प्रतिशत है वहाँ विश्व कल्याणकारी हिन्दू धर्म राष्ट्र धर्म क्यों नहीं है? स्कूल में हिन्दू विद्यार्थियों को वेद, गीता, रामायण क्यों नहीं पढ़ाये जाते?

दूसरा विश्वबन्धुत्व की अति से हिन्दू समाज में कभी धर्मबन्धुत्व की भावना उदय नहीं हो सकी क्योंकि इसे संकुचित माना गया अत: पाकिस्तान, बांग्लादेश और कश्मीर में करोड़ों हिन्दुओं की हत्या कर दी गई पर कोइ भी नहीं बोला, लेकिन वहीं कुछ मुसलमान या ईसाई मारे जाएं तो सारे संसार के मुसलमान या ईसाई चिल्लाने लगते हैं, क्योंकि उनमें धर्मबंधुत्व और उससे उत्पन्न एकता है। इससे उनकी राजनीतिक शक्ति दिन-रात बढ़ रही है। ❑

जैन समुदाय को अल्पसंख्यक दर्जा किसने कैसे थोपा?

-**श्री रिखभ चन्द जैन,** निदेशक टी.टी. ग्रुप

हिन्दू कौन है? इस साधारण प्रश्न के सैकड़ों उत्तर है। हजार वर्षों में भी इसका एक सर्वमान्य अर्थ अभी तक मिलना बाकी है। मैं कौन हूँ? आत्मा या शरीर? जैन मैं हूँ या नहीं-इसका सीधा उत्तर कोई किसी को नहीं दे पाते हैं- जैन परिवार में जन्मने से जैन होता है या कर्म से? या राग-द्वेष जीतकर वीतरागी बनने पर ही। जब यह ही पता नहीं कि हिन्दू कौन? तो फिर जैन हिन्दू है या नहीं, कोई कैसे तय करेगा? अगर इस प्रश्न का ही उत्तर नहीं है तो यह कैसे तय हो सकता है कि जैन अल्पसंख्यक हैं?

क्या वैदिक ग्रहस्थ ही हिन्दू है? सनातनी, बह्म समाजी, आर्य समाजी, कबीर पंथी, निरंकारी, बह्मकुमारी, राधास्वामी, वैष्णव, शैव आदि पंथ अलग-अलग अल्पसंख्यक है या विराट हिन्दू धारणा के ही विविध प्रकार है? बौद्ध-सिख-जैन तीनों का उद्‌गम भारत की पुण्य भूमि से है और अपने उद्‌गम का दर्शन-विचार-सिद्धान्त सभी पूर्व में पल्लवित विविध हिन्दू धाराओं का समयनुसार परिष्कृत संस्करण मात्र है। क्या संशोधित परिष्कृत प्रारूप विविधता का एक नया संस्करण नहीं है? जैसे-दूध में दही, छाछ, मक्खन, पनीर, घी, मावा, मिष्ठान्न सभी तो निहित है। इसी तरह पुण्य भूमि भारत से उद्‌गमित धर्म-दर्शन-सोच, धारणा, विश्वास, विविध भारतीय दर्शन के नई प्रकार की छटा तो हो सकती है परन्तु अपने मूल से बिलकुल अलग नहीं हो सकती है। प्रत्येक पंथ, प्रत्येक सोच अपनी अलग पहचान बनाने के लिए निश्चित रूप से अपने को अन्य छटाओं से अलग-अलग बताते हैं और ऐसे ही स्थापित करने के लिए सदैव संकल्पित रहते हैं। पर यह मात्र एक संकीर्णता है और जिसे वह धर्म परिभाषित करते हैं वह एक पंथ, मत या सम्प्रदाय मात्र गिना जाना चाहिये। एक सम्प्रदाय में भी फिर अनेक गुरू तथा धारणायें होती है।

एक होता है फूल। एक होता है पुष्पगुच्छ। दुनिया के सभी धर्म अपने में एक सुगन्धित फूल है जो अपने-अपने भक्तों को शान्त-प्रसन्न एवं संस्कारित रखते हैं। हिन्दू धर्म ही संसार का एक धर्म है जो मात्र फूल

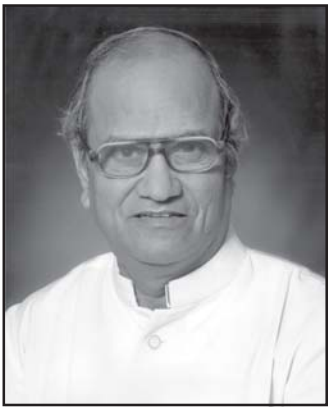

नहीं, एक बहुत सारे सुन्दर सुरभित फूलों का सुन्दर आर्कषक पुष्पगुच्छ है। विविध फूल नये से नये सुन्दरतम, मधुमय, सौम्य सुरभित फूलों से शोभायमान। यह विचित्रता केवल पुण्य भूमि भारत को ही प्राप्त है। जैन धर्म इन सब फूलों में एक अति महत्वपूर्ण आदिकाल से सुगन्धित और वर्तमान में विश्व में अहिंसा की सुगन्ध सभी धर्मों को प्रेषित करता है। अपने-अपने तरीके से प्रत्येक धर्म अहिंसा का पक्षधर है। अपने-अपने तरीके से प्रत्येक धर्म अहिंसा का पक्षधर बने और अपने-अपने मतावलम्बियों को धर्म की अन्य नियमों के साथ अहिंसा अपना कर मानवता की रक्षा करने के लिए प्रेरित करता है। ऐसा सर्वधर्म सहकार अपने आप में अमूल्य देन समस्त मानवता के लिए है। किसी एक सकुचित क्षेत्र या जनसमूह के लिए अहिंसा सुरक्षित नहीं की गई है।

कोई भी एक पुष्प पुष्पगुच्छ नहीं बन सकता। बिना फूलों के पुष्पगुच्छ भी नहीं बन सकता। फूल सुन्दर-पुष्पगुच्छ और भी अधिक सुन्दर-कोई समानता नहीं दोनों में। पुष्पगुच्छ है तो फूल की हस्ती कई गुना ज्यादा ही होगी- सुगन्ध, महक, सौरभ, सुन्दरता और कुछ होने का अनुभव केवल एकाकीपन से अनेक गुणा ज्यादा।

जैन धर्म के अनुसार अहिंसा, संयम और तप ही मोक्ष का मार्ग है। अहिंसा पालन ही जैन धर्म है। **अहिंसा परमोधर्मः**। इस मार्ग पर चलने वाले हिन्दुस्तान में केवल जैन ही नहीं है, करोड़ों लोग हैं। संविधान, सरकार, कार्यपालिका, न्यायपालिका, सभी कानून अहिंसा पर आधारित है। इससे अधिक संरक्षण जैन समाज को क्या चाहिये? अगर चाहिये भी तो क्यों? जैन तो देते हैं, त्यागते है, लेते नहीं छोड़ते हैं। अभय देते है, अभय की याचना नहीं करते।

जैन तत्व सर्वमान्य है। सर्वमान्यता में अल्पसंख्यकता क्यों? सर्वमान्यता पर जैन मान्यता को गर्व होना चाहिये।

जैन धर्म का सर्वमान्य महामंत्र नवकार एक ऐसा मंत्र है जो सिर्फ अपने या किसी एक धर्म को या किसी एक नाम के परमात्मा या गुरू को समर्पित नहीं है। इस सर्वतोभद्र कल्याणकारी नमस्कार महामंत्र सभी धर्मों के परमात्मा, संस्थापकों, आचार्यो, शास्त्र एवं ज्ञान देने वाले उपाध्यायों एवं समस्त संत महात्माओं को समान श्रद्धा से नमन करते हुये उन्हीं के गुणों की शरण लेते हैं, संकल्प लेते है, कि अपने व्यवहार चरित्र में उन गुण सभी रूपी शिक्षाओं पर व्यवहार करेगें। इतनी सर्वव्यापकता वाला दर्शन कैसे अल्पसंख्यक हो सकता है? किसी भी जैन वर्ग की संकुचिता जैन दर्शन की सर्वव्यापकता की जगह अल्पसंख्यकता नहीं मान्य हो सकती है। यहाँ यह भी शास्त्रज्ञों का मानना है कि नवकार मंत्र **"ॐ"** ओंकार की उपासना ही है। हिन्दू और जैन की एकाकी होने का यह एक मात्र प्रमाण पर्याप्त है। जैन धर्म तो निवृति मूलक है। प्रवृति का तो त्याग ही बताया है, तो ऐसे विशाल सर्वजन हिताय दृष्टिकोण में अल्पसंख्यकता कहाँ से ढूंढ सकते हैं? जैन धर्म किसी एक व्यक्ति या एक ग्रन्थ को धर्म का स्त्रोत नहीं मानता है। ज्ञान द्वारा अर्जित प्रज्ञा से जनित विवेक ही धर्म है। धर्म-अधर्म, सही-गलत, पाप-पुण्य यह सिर्फ देशकाल भाव द्रव्य अवस्था के संदर्भ में ही तय किया जा सकता है। ऐसे खुले सोच और विवेकानुसार लचीलेपन में अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक दर्जे की कहाँ आवश्यकता है? ऐसे पक्ष को क्यों आरक्षण चाहिये? क्यों संरक्षण चाहिये? जैन धर्म तो संरक्षण अन्यों को दे सकता है- ऐसी ही प्रत्येक जैन धर्मावलम्बी की भावना सदैव रहती है। जगत के समस्त प्राणी मित्र है, शत्रु कोई नहीं। क्षमा का भाव विद्यमान है। असुरक्षता एवं संरक्षण और आरक्षण की आकांक्षा ऐसे वीरों और वीर भक्तों में कहाँ से प्रस्फुटित हुई।

जैन शास्त्रों का एवं गीता का तुलनात्मक अध्ययन करें तो भगवत गीता में प्रथम जैन तीर्थंकर ऋषभ देव (आदिनाथ) को भगवान शिव का अवतार मानते हुए सामाजिक सभ्यता सृजन के लिए सदैव स्तुतीय, वन्दनीय बताया है। उनके ही पुत्र भारत चक्रवर्ती के नाम से ही देश का नाम भारतवर्ष पड़ा। जैन ऋषभ देव जो कि भारतीय सभ्यता-संस्कृति के सूत्रधार थे, चौबीस तीर्थंकरों में प्रथम जिनेन्द्र हैं।

उस समय धर्म केवल "कर्तव्य" का ही दूसरा नाम था उस समय न तो "धर्म" का जैन सनातन या वैदिक कोई लेबल था, जो अन्तिम 24वें तीर्थंकर के बाद भी कुछ सदियों तक चलता रहा। अब जब सदियों तक जैन धर्म और वैदिक या सनातन धर्म (प्रारम्भ से चलता आया धर्म) दूध में चीनी की तरह घुला मिला था, अब कैसे और क्यों जैन अलग-थलग पहचान चाहते हैं वह भी अल्पसंख्यक के ठप्पे के साथ।

गीता का कर्म योग, निष्काम भक्ति, अनासक्ति योग जैन दर्शन से शत-प्रतिशत समानता रखता है। कोई ऐसा जैन दर्शन का तत्व नहीं जिसे हिन्दू धर्म गलत समझता हो। विविधता तो जैन एवं हिन्दू दोनों को स्वीकार्य है। भगवान राम, ऋषभ देव के ही वंशज थे एवं जैन रामायण में जैनियों के लिए पूज्यनीय हैं।

बिनोवा भावे जिन्होंने जैन विधि से समाधि ली और भगवान महावीर के 25वें निर्वाण उत्सव के अवसर पर समस्त जैन समाज का मान्य ग्रन्थ **"जिण सुतम"** की रचना की। उन्होंने कहा है कि गीता और जैन दर्शन में कोई अन्तर ही नहीं है और दोनों एक ही है।

अहिंसा परमोधर्मः का प्रथम उद्घोष महर्षि वेद व्यास ने महाभारत महाकाव्य के इति श्री से पूर्व श्लोक में किया है। जैन शास्त्रों के अनुसार समस्त जैन तीर्थंकर हिन्दू मान्यताओं के क्षत्रिय थे। प्रथम गणधर गौतम प्रकाण्ड वेद पंडित ब्राह्मण थे। अनेककानेक जैनाचार्य, ऋषि, साधु-साध्वी बृहत्तर हिन्दू समाज से आते हैं। महावीर ने वर्ण व्यवस्था, जाति प्रथा को स्पष्ट नकारा हैं।

वैदिक-सनातन धर्म में परमात्मा सब कुछ करने वाला है। मानव उसे प्रभु इच्छा समझकर उसे स्वीकारते हैं। जैन दर्शन में परमात्मा अकर्ता माना गया है। जो कुछ हमारे जीवन में घटता है वह कर्मों के अनुसार, अच्छे को अच्छा फल, बुरे को बुरा फल। यही पाप पुण्य, स्वर्ग-नरक का आधार है। ठीक यही बात गीता के उपदेश में कर्म योग की व्याख्या में बताते है। भगवान श्री कृष्ण जैनियों के 21वें तीर्थंकर नेमीनाथ के भतीजे थे। हिन्दू जैन इस तरह के घुले-मिले थे कोई प्रयास करके भी कैसे अलग कर

सकता है?

अब तक के इतिहास में कभी जैन और हिन्दुओं में वैमनस्य नहीं दिखाई दिया, न है और न होगा। सामाजिक स्तर पर दोनों पूजा पद्धतियों को सामान्य रूप से मानते हैं। लक्ष्मीपूजन, गणेशपूजन, दीपावली आदि जैन वैसे ही मानते है जैसे कोई अन्य हिन्दू। अब बंटवारे की दीवार क्यों? बर्लिन की दीवार टूटी। आज के युग में भलाई, सबकी अच्छाई बाँटनेवाली दीवार तोड़ने की है न की दीवार खड़ी करने की।

मुगलकाल में, ब्रिटिश साम्राज्य में और बटवारे के समय भी किसी के यह पूछने पर कि आप हिन्दू है या मुस्लमान तो जैन परिवारों ने अपने आप को हिन्दू ही बताया। अब यह अंतर कैसे और क्यों हुआ? 20 वर्ष पहले तक जनगणना में जैन अपने आपको हिन्दू ही लिखवाते रहे हैं। क्या यह आलेख भी सब भूल गये हैं।

मानसिकता के बदलाव से समाज को अल्पसंख्यक का दर्जा दिलाने से कोई लाभ नहीं होनेवाला है। आज जैन समाज को अनेक सुअवसर उपलब्ध है। हिन्दुओं को तोड़ने की नीति, राजनीतिक रोटियां सेंकने की नीति बंद होनी चाहिए।

जैन धर्म के अनुरूप, जैनी जन्म से नहीं, कर्म से होता है। किसी भी धर्म को मानने वाला जैन सिद्धान्तों का पालन करने से ही जैन हो सकता है। धर्माचार्य और जैन समाज के बन्धु अपनी आत्मा को टटोलें और शास्त्रों का निरीक्षण करें और अपने को बहुसंख्यक हिन्दू समाज का एक भाग बतावें। क्या दिगम्बर-श्वेताम्बर अलग-अलग अल्पसंख्यक गिने जायेगें?

जैन समाज में स्वयं भी 3-4 मुख्य रूप से विभिन्न पूजा पद्धतियां हैं। अनेकान्त पक्षधर किसलिए हिन्दुओं से अलग होना चाहते है? शिक्षण संस्थानों में मान्यता बदलने पर भी कोरा काल्पनिक लाभ ही है। जैन समाज द्वारा संचालित विद्यालयों में जैन विद्यार्थियों की संख्या कुछ ही प्रतिशत रहती है। विद्यालय निर्माता, प्रबन्धक और कभी-कभी तो वहाँ पढ़ाने वाले शिक्षकों के बच्चे भी अन्य किसी ईसाईयों के विद्यालयों में पढ़ते हैं।

जैन अल्पसंख्यक है या नहीं? इसका निर्णय करने का अधिकार किसी सरकार, किसी राजनैतिक पार्टी या स्वयंभू जैनधर्म के एक छोटे से स्वार्थ भावना से अल्पसंख्यक दर्जे की मांग करनेवाले वर्ग विशेष को नहीं है। अल्पसंख्यक वस्तु स्थिति में अगर जैन हैं भी तो यह निर्णय करना कि सरकार से यह माँग करनी है या नहीं यह निर्णय स्वसंस्थापित जैनी संस्थाओं के पदाधिकारी या कुछ भ्रमित कार्यकर्ता नहीं कर सकते। तेरापंथ धर्मसंघ के नायक श्रद्धेय महाश्रमण जी ने अपना विचार व्यक्त किया है कि जैन अल्पसंख्यक है या नहीं ऐसा कोई निर्णय लेना जैन धर्माचार्यों और गुरूओं के कार्यक्षेत्र में नहीं आता है। केन्द्र सरकार ने मांग स्वीकारने से पहले सिर्फ वोट की राजनीति चली और बिना तथ्य जांचे, बिना जनगणना या अधिकारिक वर्ग की इच्छा बिना टटोले सम्बंधों के आधार पर लिए निर्णय पर मोहर लगा दी। यह एक अनुचित निर्णय है। अब जैन-जैनेतर समाज में बहस छिड़ गई है। अब कहा जा रहा है "यह कैसे हुआ"? हम तो हिन्दू परम्परा पर विश्वास करते हैं, अब क्या होगा? इत्यादि। जैन समाज का बड़ा वर्ग निर्णय के पक्ष में नहीं है। शीघ्र ही इस निर्णय को वापिस लेने में जैन समाज तथा समस्त राष्ट्र का हित है।

बीकानेर में देशभर से आए जैन समाज के प्रतिनिधियों ने "ओम अर्हम्" का नाद कर जैन समाज को अल्पसंख्यक का दर्जा देने को लेकर उठाए गए सवाल का समर्थन किया।

भाजपा सांसद डॉ. मुरली मनोहर जोशी ने हजारों जैन अनुयायियों की उपस्थिति में कहा कि जैन अल्पसंख्यक किस बात के लिए हो गए? क्यों हो गए? जैन समुदाय देश में सेवाओं की संस्थाएं चलाता है। धर्मशालाएं, चिकित्सालय एवं निर्धनों के लिए सेवा कार्य करते है। यह महावीर का देश है। इस देश में जैन अल्पसंख्यक नहीं है। इस बात पर जैन समाज का आचार्य महाश्रमण मार्गदर्शन करें। जोशी ने तुलसी समाधि स्थल पर आयोजित समारोह में कहा कि जो इस देश का अन्न खाता है, वह इस देश में अल्पसंख्यक नहीं है। किसी की भी पूजा पद्धति भिन्न-भिन्न हो सकती है, इस देश का निवासी कोई अल्पसंख्यक नहीं हो सकता। संविधान में अल्पसंख्यक बना रखा है। उनको भी कहता हूँ हम एक है। सब सर्वधर्म सद्भाव पैदाकर एक हों। विश्व में आध्यात्मिक समाज की रचना की जाए। संयुक्त राष्ट्र संघ में इस आशय का प्रस्ताव किया जाए। भौतिक समाज से विश्व

का कल्याण नहीं हो सकता।

आचार्य महाश्रमण ने कहा कि संविधान में अल्पसंख्यक बनाने के प्रावधान को ही निकाल दें। अल्पसंख्यक का दर्जा मिलने से समाज के लोग भी लाभ उठाना चाहते हैं। पूरा देश एक रहे। कोई अल्पसंख्यक -बहुसंख्यक की अवधारणा नहीं रखें।

जैन जन्मता नहीं है। जैन बनना पड़ता है। जो व्यक्ति कैवल्य प्राप्त, महाप्रज्ञावान, महाप्रज्ञानियों द्वारा बताये मार्ग पर मोक्ष प्राप्ति के लिए चल पड़ता है वही जैन है। समस्त जैनों को मान्य मंगल पाठ में "कैवल्य पणतों धम्मो शरणं पव्ज्जामि" कहा गया है- कैवली भगवन्तों के बताये धर्म की शरण लेता हूँ- उस पथ पर चलने के लिए प्रयास करता हूँ और ऐसा व्यक्ति कोई भी, किसी भी धर्म को मानने वाला किसी पद्धति से पूजा उपासना करने वाला हो सकता है। जिस कैवल्य प्राप्त महाज्ञानी जिनके बताये धर्म के रास्ते मोक्ष मार्ग को अंगीकार करते हैं वह तो किसी भी आस्था से उद्गमित कैवली हो सकते हैं, सिर्फ जिन मार्ग से उद्गमित ही नहीं। इतनी विशालता वाला धर्म, गुणोंपासक धर्म, जिसने "स्वास्तिक" रूप में सभी मार्ग जानने, समझने और उनमें से वांछनीय गुण ग्रहण करने को तत्पर हो वह "अल्पसंख्यक" कभी भी किसी भी सोच से नहीं हो सकता है। संकीर्णता विशालता को कभी नहीं समेट सकती है।

महात्मा गाँधी ने जीवन बनाने के जो नियम दिये हैं उनमें जैन मान्यता के पाँचों महाव्रतों को उसी क्रम में रखा है जिस क्रम में जैनाचार्य रखते हैं। कृष्ण उपासक नरसी मेहता के भजन "वैष्णव जन तो तैने कहिये,....." में जैन मान्यता के पाँच व्रत, चार कषाय व छः कुव्यसन को ही कुछ पक्तियों में व्रत मानने एवं कषाय कुव्यसन छोड़ने का ही उद्घोष है। हिन्दू शास्त्रों में वर्णित यम नियम-देह नियम ही जैन पंच महाव्रत है। अपरिग्रह भी हिन्दू मान्यता में श्रेयष्कर माना है। पतंजलि एवं अन्यान्य हिन्दू वैदिक धारा के ऋषि जैन दर्शन में भी सदैव समान रूप से मान्य रहे।

तमिल साहित्य के महानतम पुरोधा थिरू व्लुवर का दर्शन तो अक्षरशः जैन दर्शन ही है। दक्षिण भारतीय जैन तो उन्हें "जैन मुनि" ही गिनते हैं। यही बात कबीर और नानक देव जी की शिक्षाओं की है। जैन विद्वान उन्हें आदर से स्वीकारते हैं। स्वामीनारायण शिक्षा पत्री एवं जिन उपदेशों में कोई असमानता ही नहीं हैं- स्वामीनारायण श्रृंगारमय, रसमय, साकार, पूजा अवश्य करते हैं- निरंकार पूजा साकार पूजा का ही पड़ाव है, ऐसा कृष्ण भगवान ने गीता में बताया है जैन मूर्तिपूजक वर्ग भी श्रृंगारमय साकार पूजा करते हैं। बौद्ध धर्म में और जैन मान्यताओं में समानतायें अधिक और विषमतायें मात्र पूजा पद्धति और माध्यमार्गीय जीवनचर्या को लेकर ही है। तथागत बोधि प्राप्ति पूर्व जैन परिव्राजक रहें।

संख्या में पारसी और यहूदी भी भारत में अल्पसंख्यक है। परन्तु इन दोनों ही समुदायों ने कभी भी सरकार से कोई याचना नहीं की। वे सम्पन्न हैं। समर्थ है। कोई आरक्षण संरक्षण नहीं चाहिये। जैन समुदाय की धाक तो सदियों से जग जाहिर है। यदि जैन समुदाय अपने आपको अल्पसंख्यक पाता है तो फिर किसी भी तरह की याचना कर अपना ही स्तर क्यों छोटा करना चाहते हैं। सरकारी आंकड़े देशभर में जैन मतावलम्बियों की संख्या करीब पचास लाख ही बताती है, और जैन समाज एक करोड़ से ज्यादा। दोनों सच। क्योंकि आधे से ज्यादा जैन अभी भी "हिन्दू" वर्ग में ही अपने आपको अंकित करवाते हैं।

1991 से पूर्व जनसंख्या गणना के सारे अभिलेख जैन परिवारों को हिन्दू वर्ग में ही सम्मिलित करते आये हैं। स्वेच्छा से जैन परिवार अपने आपको हिन्दू ही बताते आये हैं। आज भी बाता रहें हैं।

सामाजिक स्तर पर भी जैन और वैष्णव- सनातन वर्ग में सम्बन्ध-विवाह आदि होते हैं- अग्रवाल, खण्डेलवाल, जायसवाल, सरावगी, पोखान, गोत्रिय जातियों में धर्म सम्बन्धों में आड़े नहीं आता है।

ओसवाल, देसाई, पटेल आदि गोत्रों में कभी-कभी सम्बन्ध बिना रोक-टोक अवांछनीयता के होते आयें हैं। हिन्दू और जैन दोनों ही धारायें इन परिवारों में पल्लवित एक ही घर में होती रहती है।

सभी त्यौहार, मन्दिर, धर्मशाला, उपासना-गृह, हिन्दू एवं जैन दोनों ही समुदाय बिना किसी प्रश्न के बराबर सहभागिता के साथ होता है। ऐसे में कैसे बीच की दीवार बना सकते हैं।

शेष पृष्ठ 16 पर.....

दिल्ली के अनेकों जिलों में बजरंगियों ने ली त्रिशूल दीक्षा

नई दिल्ली। दिल्ली बजरंग दल की लाजपत नगर इकाई ने आई.एन.ए. मार्केट स्थित हनुमान मंदिर पर त्रिशूल दीक्षा के कार्यक्रम का आयोजन किया, कार्यक्रम में जिले के सभी कार्यकर्ताओ के साथ ही स्थानीय लोगों ने भाग लिया। कार्यक्रम में बजरंग दल के अखिल भारतीय प्रशिक्षण प्रमुख श्री मनोज वर्मा जी ने कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन किया और त्रिशूल के महत्व का समझते हुये युवाओं को राष्ट्र और धर्म के लिए सजग और संगठित होकर कार्य करने का आह्वाहन किया। कार्यक्रम में मार्किट के लोग तथा स्थानीय लोग भी उपस्थित थे। कार्यक्रम के पश्चात प्रत्येक माह होने वाले भंडारे का शुभारम्भ श्री नीरज दोनेरिया एंव जिला संयोजक श्री किशन बसोया के द्वारा हुआ, कार्यक्रम में प्रान्त सुरक्षा प्रमुख श्री श्याम कुमार, जिला सह -संयोजक बजरंग दल एव विहिप मीडिया टोली के सदस्य श्री राकेश पाण्डेय, जिला सह-मंत्री श्री मुन्ना लाला शर्मा, प्रखंड मंत्री श्री धनी राम, जिला सुरक्षा प्रमुख श्री रवि पाण्डेय, मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

चाँदनी चौक में विहिप-बजरंग दल दिल्ली चाँदनी चौक जिले द्वारा किया गया धर्म रक्षा निधि कार्यक्रम में द्वीप प्रज्ज्वलन बजरंग दल दिल्ली प्रांत पूर्णकालिक श्री नीरज दोनेरिया, प्रांत सुरक्षा प्रमुख श्री श्याम कुमार, जिला सायोजक बजरंग दल सन्नी सारवान ने किया, कार्यकर्ताओ को सम्बोधित करते हुए बजरंग दल प्रांत पूर्णकालिक श्री नीरज दोनेरिया ने कहा 1964 विहिप स्थापना से संगठन ने हिन्दुओं को संगठित कर हर देशद्रोही गतिविधि का मुह तोड़ जवाब दिया है हिन्दुओं के संगठित और जागरूक होने के कारण इस्लामिक जिहादी देश द्रोहिओं के होसले पस्त होने लगे है, कार्यक्रम में स्थानीय समाज के लोगों के साथ विहिप- बजरंग दल के कार्यकर्ता जिला मंत्री श्री मंगल पाण्डेय, श्री सुनील, श्री महेंदर भरद्वाज, श्री कुलदीप चौहान उपस्थित रहे।

प्रेषक : **राकेश कुमार पाण्डेय**, इद्रप्रस्थ विहिप

.....पृष्ठ 15 का शेष

दिगम्बर संघ के भट्टारक दक्षिण भारत के सभी तीर्थस्थलों में आदिनाथ, बाहुबली और महादेव शिव की पूजा नित्य नियमित रूप से समान श्रद्धा के साथ करते हैं। सभी भट्टारक जी, विशेषकर श्री वीरेन्द्र हेगड़े जी समस्त स्थानीय वर्गके लिए न्याय देने के धर्माधिकारी है और उनके फैसले सभी राज्यकीय न्यायालयों को पूर्णरूप से अधिकारिक तौर पर मान्य होता है। यह है जैन एवं हिन्दू समाज का एकाकीपन का एक अनूठा उदाहरण।

वर्तमान में देश के सर्वमान्य वरिष्ठतम हिन्दू संगठन विश्व हिन्दू परिषद एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ऋषभदेव एवं महावीर को श्रद्धेय मानते हुए उनकी शिक्षाओं को शिरोधार्य करते हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपनी ध्वज वन्दना में स्पष्ट रूप से जैन समुदाय को हिन्दू समाज का अभिन्न अंग मानते हैं। विश्व हिन्दू परिषद के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष डॉ. प्रवीन तोगड़िया जी ने सरकार के जैन अल्पसंख्यक दर्जा देने के कदम को गलत एवं चुनावी राजनीति से प्रेरित राज करने वाली पार्टीका फूट डालने का नुस्खा मात्र बताया है।

अभी तक सिर्फ केन्द्रिय मंत्रीमंडल ने स्वीकृति दी है कि जैन समुदाय को अल्पसंख्यक दर्जा दिया जाये। अभी भी लोकसभा, राज्यसभा और राष्ट्रपति से स्वीकृति बाकी है। संसद के इस अंतिम सत्र में समय भी नहीं है। अत: राष्ट्र, जैन समाज, सरकार और संसद इस विषय पर पुनर्विचार कर जैन अल्पसंख्यक विषय को समाप्त करना ही उचित होगा। ❑

भीष्म पितामह

-श्री मोहन जोशी, केन्द्रीय मंत्री, वि.हि.प.

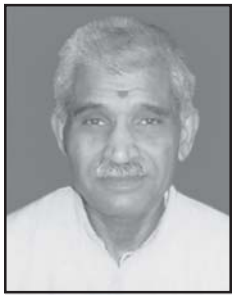

भीष्म पितामह का पूर्व नाम देवव्रत था। ये महाराजा शान्तनु के पुत्र थे। ये गंगा देवी के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। इन्होंने कुमारावस्था में ही सम्पूर्ण वेदों का अध्ययन तथा शास्त्रों का अभ्यास कर लिया था।

भीष्म जी की पितृ-भक्ति

एक दिवस राजर्षि शान्तनु की दृष्टि वन में विचरते हुए कैवर्तराज की कन्या सत्यवती पर पड़ी। वे उस पर आसक्त हो गए। सत्यवती एक राजकन्या थी परन्तु कैवर्तराज के यहां उसका पालन-पोषण हुआ था। उन्होंने उससे विवाह करना चाहा। उसके पिता ने उसके विवाह के लिए राजा के सामने शर्त रखी कि उसके गर्भ से उत्पन्न होने वाला पुत्र ही राज्य का उत्तराधिकारी बने। महाराज शान्तनु को पुत्र देवव्रत के प्रति अगाध स्नेह था, जिससे उन्होंने यह शर्त मंजूर नहीं की, किन्तु वे कन्या के पाने की चिन्ता में उदासीन रहने लगे। जब देवव्रत को पिता की उदासी का कारण ज्ञात हुआ तो वे स्वयं कैवर्तराज के पास पहुंचे और उसकी शर्त मंजूर करते हुए प्रतिज्ञा की कि 'सत्यवानों में श्रेष्ठ निषादराज। मेरी यह सच्ची प्रतिज्ञा सुनो और ग्रहण करो। .....इस सत्यवती के गर्भ से जो पुत्र पैदा होगा, वही हमारा राजा बनेगा।

इस पर निषादराज ने शंका करते हुए कहा-महाबाहो। आपकी प्रतिज्ञा कभी टल नहीं सकती, इसके विषय में मुझे संदेह नहीं है परन्तु आपका जो पुत्र होगा, वह शायद इस प्रतिज्ञा पर दृढ़ न रहे, यही हमारे मन में बड़ा भारी संशय है।

इस पर देवव्रत ने दूसरी भीषण प्रतिज्ञा की-

'निषादराज! आज से मेरा आजीवन अखण्ड ब्रह्मचर्य व्रत चलता रहेगा। मैंने जन्म से लेकर अब तक कोई झूठी बात नहीं कही है। जब तक मेरे शरीर में प्राण रहेंगे, तब तक मैं संतान उत्पन्न नहीं करूंगा। तुम पिताजी के लिए अपनी कन्या दे दो।

देवव्रत की इस भीषण प्रतिज्ञा को सुनकर देवताओं ने पुष्पवृष्टि की और तभी से इनका नाम भीष्म पड़ गया। भीष्म ने सत्यवती को ले जाकर अपने पिता को सौंप दी। पुत्र का यह दुष्कर कार्य जानकर शान्तनु अत्यन्त प्रसन्न हुए और उन्होंने उनको इच्छा-मृत्यु का वरदान दिया और कहा, मेरे निष्पाप पुत्र। जब तक यहां जीवित रहना चाहोगे, तब तक मृत्यु तुम्हारे ऊपर अपना प्रभाव नहीं डाल सकती। तुम से आज्ञा लेकर ही मृत्यु तुम पर अपना प्रभाव प्रकट कर सकती है।

जिस कामनी कांचन के लिए संसार के इतिहास में न मालूम कितनी बार रक्तपात हुआ है और राज्य के राज्य नष्ट हो गए हैं, उसका भीष्म जी ने सदैव के लिए पिता की तुष्टि के लिए त्याग कर विश्व के सम्मुख एक महान आदर्श उपस्थित किया। धन्य है उनकी पितृ भक्ति।

भीष्म जी का भ्रातृ प्रेम

महाराज शान्तनु के सत्यवती के गर्भ से चित्रांगद और विचित्र वीर्य नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए। चित्रांगद युवा भी न होने पाए थे कि महाराज शान्तनु चल बसे। भीष्म जी ने चित्रांगद को राजा बनाया, परन्तु वे कुछ ही दिनों बाद गन्धर्वों के साथ युद्ध में मारे गए। विचित्रवीर्य भी अभी बालक ही थे, अत: वे भीष्म की देखभाल में राज्यकार्य करने लगे। भीष्म को उसके विवाह की चिन्ता हुई। ये अपने भाई के लिए काशीराज की तीन कन्या-अम्बा-अम्बिका और अम्बालिका को हर लाए। बड़ी कन्या अम्बा मन ही मन राजा शाल्व को वर चुकी थी। इसका पता लगने पर उसे वहां से विदा कर दिया और दो कन्याओं का विचित्रवीर्य के साथ विवाह कर दिया।

अम्बा को शाल्व राज ने स्वीकार नहीं किया। वह कहीं की भी नहीं रही। लज्जावश वह पिता के घर भी न जा सकी। अपनी दुर्दशा का कारण भीष्म को समझकर उन्हें कोंसने लगी और उनसे बदला लेने का उपाय सोचने लगी। वह जमदग्निपुत्र परशुराम जी की शरण में गयी और उनसे अपना दु:ख निवेदन किया। परशुराम जी भीष्म के गुरु थे। इसलिए उन्होंने भीष्म को कुरुक्षेत्र में बुलाकर

कहा-इस कन्या का बलपूर्वक स्पर्श करके तुमने इसे दूषित कर दिया है, इसीलिए शाल्व ने इसे स्वीकार नहीं किया। अतः अब तुम्हीं को इसका विधिवत पाणिग्रहण करना चाहिए। भीष्म जी ने कहा-इस कन्या ने ही मुझे कहा था कि मैं शाल्व की हो चुकी हूं। ऐसी हालत में मैं उसे कैसे रख सकता था। इस पर परशुराम जी कुपित हो गए और उन्हें मंत्रियों सहित मार डालने को उद्यत हो गए। परशुराम जी को भीष्म ने बहुत अनुनय विनय की, मगर परशुराम जी तो अपनी ही बात पर दृढ रहे। तब उन्होंने महात्मा मरूत के द्वारा कहे गए निम्न श्लोक को कहते हुए बाध्य होकर परशुराम जी से युद्ध किया-

यदि गुरु भी गर्व में आकर कर्तव्य और अकर्तव्य को न समझते हुए कुपथ का आश्रय ले तो उसका परित्याग कर दिया जाता है।

गुरु शिष्य में तेईस दिन तक लगातार भयंकर युद्ध होता रहा परन्तु किसी की भी जीत नहीं हुई। अन्त में देवताओं और मुनियों ने बीच में पड़कर इस युद्ध को बन्द कराया। यह ब्रह्मचर्य की ही अपार शक्ति थी कि भीष्म पितामह ने परशुराम जी जिन्होंने इक्कीस बार पृथ्वी को क्षत्रियों से हीन किया था, के भी दांत खट्टे कर दिए और अपनी सत्य-प्रतिज्ञा से तिलभर भी नहीं हटे।

भीष्म जी का सत्य प्रेम

उधर विचित्रवीर्य भी ऐशो-आराम में फंस जाने के कारण अधिक दिनों तक जीवित न रह सके। विवाह के कुछ ही वर्ष बाद वे क्षय रोग के शिकार हो गए और संसार से चल बसे। उनके कोई संतान न होने के कारण कुरुवंश के उच्छेद का प्रसंग उपस्थित हो गया।

कुल की रक्षा के लिए भीष्मजी से राज्यग्रहण एवं विवाह करने की माता सत्यवती के कहने पर भीष्म जी कहते हैं-''मैं तीनों लोकों का राज्य, देवताओं का साम्राज्य अथवा इन दोनों से भी अधिक महत्त्व की वस्तु को भी एकदम त्याग सकता हूं परन्तु सत्य को किसी प्रकार नहीं छोड़ सकता। पृथ्वी अपनी गन्ध छोड़ दे, जल अपने रस का परित्याग कर दे, तेज रूप का और वायु स्पर्श नामक स्वाभाविक गुण का त्याग कर दे, सूर्य अपनी प्रभा, अग्नि अपनी उष्णता को छोड़ दे, आकाश शब्द का और चन्द्रमा अपनी शीतलता का परित्याग कर दे। इन्द्र पराक्रम को छोड़ दे और धर्मराज धर्म की उपेक्षा कर दें परन्तु मैं किसी प्रकार सत्य को नहीं छोड़ सकता।'

सत्य का महत्त्व बताते हुए आगे कहते हैं- सत्य बोलो, असत्य न बोलो, सत्य ही सनातन धर्म है। राजा हरिश्चन्द्र सत्य के प्रभाव से आकाश में चन्द्रमा के समान विचरते हैं।

जो लोग प्राण जाने का अवसर उपस्थित होने पर भी सत्य नहीं छोड़ते वे सम्पूर्ण प्राणियों के विश्वासपात्र बने रह कर सभी दुखों से पार हो जाते हैं।

अमृत और मृत्यु-ये दोनों इस शरीर में ही विद्यमान हैं। मोह से मृत्यु प्राप्त होती है और सत्य से अमृत पद की प्राप्ति होती है।

सत्य के पालन से मनुष्य दीर्घायु होता है। सत्य से कुल परम्परा का पालन होता है और सत्य का आश्रय लेने से वह लोकमर्यादा का संरक्षक है।

भगवान् श्रीकृष्ण में अविचल भक्ति

भीष्मपर्व में दुर्योधन के पूछने पर पाण्डवों की लगातार विजय का कारण बताते हुए कहते हैं-ये चराचर गुरु भगवान श्रीहरि तीनों लोकों को धारण करते हैं। ये ही योद्धा हैं, ये ही विजय हैं और ये ही विजयी हैं। सबके कारण भूत परमेश्वर भी ये ही हैं। राजन्! यह श्रीहरि सर्वस्वरूप और तम एवं राग से रहित हैं। जहां श्रीकृष्ण हैं, वहां धर्म है और जहां धर्म है, वहीं विजय है।

युद्ध के नवें दिन भगवान श्रीकृष्ण ने देखा कि भीष्म ने युधिष्ठिर की सेना में प्रलय के समान दृश्य उपस्थित कर दिया। भगवान यह सहन नहीं कर सके। वे रथ से कूद पड़े और चाबुक हाथ में लिए ही सिंहनाद करते हुए भीष्म की ओर वेग से दौड़े।

भीष्म जी तनिक भी विचलित नहीं हुए और भगवान् का स्वागत करते हुए बोले-आइए! आइये कमलनयन! देवदेव! आपको नमस्कार है। सत्यव्रत शिरोमणि! इस महासमर में आज मुझे मार गिराइये। देव! निष्पाप श्रीकृष्ण! आपके द्वारा संग्राम में मारे जाने पर भी संसार में मेरा परम कल्याण ही होगा। गोविन्द! आज इस युद्ध में मैं तीनों लोकों द्वारा सम्मानित हो गया। अनध! मैं आपका दास हूं। आप इच्छानुसार मुझ पर प्रहार कीजिए।

परम पराक्रमी एवं बुद्धिमान शान्तनुनंदन भीष्म महान

उपनिषदों के सारभूत योग का आश्रय ले प्रणव का जप करते हुए उत्तरायण काल की प्रतीक्षा में बाणशय्या पर सोये रहे।

पुरुषसिंह भीष्म शरशय्या पर पड़े-पड़े हाथ जोड़ पवित्र भाव से मन, वाणी और क्रिया द्वारा श्रीकृष्ण का ध्यान करने लगे। ध्यान करते-करते वे भगवान की स्तुति करने लगे।

'जो भूत, वर्तमान और भविष्यकाल रूप है, जो भूत आदि की उत्पत्ति और प्रलय के कारण हैं, जिन्हें सम्पूर्ण प्राणियों का अग्रज बताया गया है, उन भूतात्मा परमेश्वर को नमस्कार है। जो काल से परे हैं, यज्ञ से भी परे हैं और परे से भी अत्यन्त परे हैं, जो सम्पूर्ण विश्व के आदि हैं, किन्तु जिनका आदि कोई भी नहीं है, उन विश्वात्मा परमेश्वर को नमस्कार है। जो ब्राह्मणों के प्रेमी तथा गौ और ब्राह्मणों के हितकारी हैं, जिनसे समस्त विश्व का कल्याण होता है, उन सच्चिदानन्द स्वरूप भगवान् गोविन्द को प्रणाम है। नारायण ही परब्रह्म हैं, नारायण ही परमतम हैं। नारायण ही सबसे बड़े देवता हैं और भगवान नारायण ही सदा सबकुछ हैं।

इस प्रकार भीष्म पितामह भगवान का ध्यान एवं स्तुति कर रहे थे तो उधार भगवान् भी भीष्म के ही ध्यान में तन्मय हो रहे थे।

महाराज युधिष्ठिर के राजसूययज्ञ में भगवान् श्रीकृष्ण जी की अग्रपूजा करने को कहते हुए युधिष्ठिरजी को कहते हैं-'कुन्तीनंदन ! मैं तो इस संसार में सबसे बढ़कर पूजनीय श्री कृष्ण जी को ही मानता हूं। ये भगवान श्रीकृष्ण सब राजाओं के मध्य में अपने तेज, बल और पराक्रम के द्वारा इस प्रकार चमक रहे हैं, जैसे ग्रह-नक्षत्रों में सूर्य। जैसे, वायुहीन स्थान पवन के झौंके से आह्लादित हो उठता है, उसी प्रकार श्रीकृष्ण के द्वारा हमारी यह सभा आह्लादित और प्रकाशित हो रही है।

शिशुपाल के आक्षेप करने पर पुनः कहते हैं-महाबाहू! श्रीकृष्ण केवल हमारे ही लिए परम पूजनीय नहीं हैं। वे तो तीनों लोकों में अभिनन्दनीय हैं। यह सम्पूर्ण जगत पूर्णतः वासुदेव श्रीकृष्ण में प्रतिष्ठित है।'

दुर्योधन को सन्धि के लिए समझाते हुए कहते हैं-'इस मनुष्य लोक में इन श्रीकृष्ण को इन्द्र सहित सम्पूर्ण देवता और असुर भी नहीं जीत सकते। ये श्रीकृष्ण नारायण हैं और अर्जुन नर माने गए हैं। नारायण और नर दोनों एक ही सत्ता है, परन्तु लोकहित के लिए दो शरीर धारण करते हैं।

धर्मराज युधिष्ठिर ने भगवान को ध्यानमग्न देखकर पूछा-पुरुषोत्तम! सम्पूर्ण लोक आपका ही ध्यान करते हैं। फिर प्रभो! आप किसका ध्यान कर रहे हैं?'

भक्तों को महत्त्व देने वाले भगवान् ने कहा-राजन्! बाण शय्या पर पड़े हुए पुरुषसिंह भीष्म, जो इस समय बुझती हुई आग के समान, मेरा ध्यान कर रहे हैं इसलिए मेरा मन भी उन्हीं में लगा हुआ है।' पृथ्वीनाथ! धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष-इन चारों विद्याओं को होता, उद्गाता, ब्रह्मा और अध्वर्यु से सम्बन्ध रखने वाले कर्मों को चारों आश्रमों के धर्मों को तथा सम्पूर्ण राजधर्मों को उनसे पूछिए। कौरव वंश का भार संभालने वाले भीष्मरूपी सूर्य अब अस्त हो जायेंगे, उस समय सब प्रकार के ज्ञानों का प्रकाश नष्ट हो जायेगा, इसलिए मैं आपको वहां चलने को कह रहा हूं। '

धन्य है प्रभु की इस भक्त वत्सलता को!

भक्तों को गौरव प्रदान करने वाले भगवान् ने भीष्म पितामह को गौरव देते हुए कहा-'भीष्मजी! इन युधिष्ठिर जी की कुछ शंकाएं हैं। उनका आप निवारण कर दीजिए।'

भगवान् श्रीकृष्ण की कृपा से भीष्म जी की सारी वेदना दूर हो गई और वे युधिष्ठिर को राजधर्म, भक्ति, ज्ञान, योग, कर्म आदि के नाना उपदेश देने लगे।

सूर्य के उत्तरायण होने पर भीष्म जी भगवान् कृष्ण से देहत्याग करने की अनुमति मांगते हैं-'भगवन्! देव-देवेश्वर! देवता और असुर सभी आपके चरणों में मस्तक झुकाते हैं। आपको नमस्कार है। कमलनयन श्रीकृष्ण। पुरुषोत्तम। बैकुण्ठ! आप सदा मेरा उद्धार करें। अब मुझे जाने की आज्ञा दें।''

इनकी भक्ति का ही यह फल था कि साक्षात् भगवान् श्रीकृष्ण का दर्शन करते हुए इन्होंने शरीर छोड़ा।

भीष्म पितामह ने युधिष्ठिर को जो भगवान विष्णु का सहस्रनामस्तोत्र सुनाया, उससे इनकी भग्वद्भक्ति एवं भगवद्तत्व का ज्ञान टपका पड़ता है। ये भक्ति, ज्ञान और सदाचार की दृष्टि से एक आदर्श पुरुष थे। ❑

इतालवी झूठ से संघ को घेरने की राष्ट्रघाती षडयंत्र

-डॉ. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री

आज तक झूठ दो प्रकार के माने जाते थे। झूठ और सफेद झूठ। लेकिन पिछले कुछ वर्षों से भारतीय राजनीति में एक तीसरा झूठ प्रचलित हुआ- इतालवी झूठ। अपने तहलका वाले तरुण तेजपाल के जेल में चले जाने के बाद लगता था कि भारतीय राजनीति में इतालवी झूठ की परम्परा फिलहाल रुकेगी। लेकिन अंग्रेजी की एक पत्रिका कारवाँ ने छाती ठोंक कर घोषणा कर दी है कि आसन्न लोकसभा चुनावों के कारण इतालवी झूठ की घटनाएँ बढ़ेंगीं न कि समाप्त हो जायेंगीं। कारवाँ ने पिछले दिनों बताया कि उनका एक पत्रकार अम्बाला जेल में जबरदस्त सुरक्षा व्यवस्था में रखे गये स्वामी असीमानन्द से पिछले दो साल से इन्ट्रव्यू ले रहा था। अब जाकर वह इन्ट्रव्यू मुकम्मल हुआ है। कारवाँ के अनुसार इस इन्ट्रव्यू में स्वामी जी ने यह कहा है कि देश में हिंसात्मक गतिविधियाँ करने के लिये राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत ने परोक्ष रुप से उन्हें सहमति दी थी। कारवाँ को यह भी मालूम था ही कि उसके इस झूठ पर कोई सहज भाव से विश्वास नहीं करेगा, इसलिये उसने यह भी दावा किया कि उसके पास इस दो साल के लम्बे साक्षात्कार के टेप भी सुरक्षित हैं। इतालवी झूठ की यही खूबी है। वह टेप अपने साथ लेकर चलता है। यह कहानी तरुण तेजपाल के काल से चली आ रही है। दरअसल इस प्रकार की राजनैतिक टेप को तैयार करने में जो कौशल खर्च होता है, उसी कौशल से इतालवी झूठ ठोस आकार ग्रहण करता है। प्रिंट व इलैक्ट्रिोनिक मीडिया के बाद टेप मीडिया में घुस जाने के बाद इतालवी झूठ की उम्र थोड़ी लम्बी जरुर हो जाती है, लेकिन इस तीसरे प्रकार के झूठ को चलाने वाले भी जानते हैं कि निश्चित अवधि के बाद, इस झूठ की पोल खुल जाती है। परन्तु इससे उन्हें कोई अन्तर नहीं पड़ता क्योंकि तब तक इस झूठ ने अपने शिकार का जितना नुकसान करना होता है, वह कर चुका होता है। कारवाँ के इतालवी झूठ को इसी पृष्ठभूमि में समझा जा सकता है।

सोनिया गान्धी की पार्टी की सरकार पिछले कुछ सालों से किसी तरह समझौता एक्सप्रेस ब्लास्ट, अजमेर दरगाह विस्फोट और मालेगाँव बम विस्फोट में संघ का नाम जोड़ने के लिये बचकाने प्रयास करती रही है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये भारत सरकार की जाँच एजेंसियाँ पिछले तीन साल से इस इतालवी झूठ के प्रयोग स्वामी असीमानन्द पर कर रहीं हैं। उनका उद्देश्य किसी भी तरीके से संघ की हिंसात्मक गतिविधियों में संलिप्तता की तथाकथित अवधारणा को प्रचारित प्रसारित करना है। दो साल पहले राष्ट्रीय जाँच अभिकरण ने स्वामी असीमानन्द के हवाले से ही कहा था कि संघ के एक प्रमुख प्रचारक इन्द्रेश कुमार ने इन हिंसात्मक गतिविधियों के लिये धन मुहैया करवाया था। स्वामी जी का यह बयान दिल्ली और पंचकूला हरियाणा के सक्षम अधिकारियों के सम्मुख बाकायदा दर्ज भी किया गया। यह अलग बात है कि स्वामी जी ने न्यायालय को पत्र लिख कर तुरन्त अपनी स्थिति स्पष्ट की कि यह बयान पुलिस ने उनसे जबर्दस्ती दिलाया है और यह बेबुनियाद है। लेकिन जाँच ऐजंसियां, (जैसा की सर्वोच्च न्यायालय ने उनका आकलन करते हुये बताया कि वे पिंजरों में बन्द तोते की भूमिका निभा रहीं हैं,) इस इतालवी झूठ को फैलाने के लिये कटिबद्ध थीं क्योंकि इससे पिंजरे के मालिक को राजनैतिक लाभ मिलने की संभावना थी। इसके लिये इन एजेंसियों ने किसी भरत रतनेश्वर को खोज निकाला। उसे इस झूठ का वायदा मुआफ गवाह बनाने की कोशिश की। लेकिन जब उसने इन्कार कर दिया तो उसे ही अभियुक्त बना दिया गया। यह अलग बात है कि जब राष्ट्रीय जाँच अभिकरण छः मास में भी उसके विरूद्ध आरोप पत्र न्यायालय में दाखिल नहीं करवा सका तो उसे जमानत पर छोड़ना ही पड़ा।

अप्रेल 2012 में राष्ट्रीय जाँच अभिकरण एन.आई.ए ने जयपुर जेल में बन्द मुकेश वासनी पर डोरे डाले। उसे एक करोड़ रुपये तक का लालच भी दिया गया। काम केवल इतना ही था कि उसे संघ के तीन बड़े अधिकारियों का नाम आतंकवादी गतिविधियों के साथ जोड़ना था।

साथ ही यह बयान भी देना था कि संघ के ही एक जिला प्रचारक रह चुके सुनील जोशी की हत्या भी संघ के बड़े अधिकारियों ने करवाई थी। ज्ञात हो कि मध्य प्रदेश के पूर्व जिला संघ प्रचारक सुनील जोशी की हत्या हो गई थी और तब ऐसी चर्चा चली थी उसकी हत्या जाँच एजेंसियों ने ही करवाई है ताकि इसमें संघ के कुछ अधिकारियों को इम्पलिकेट किया जा सके। जाँच एजेंसियों की तब काफी किरकिरी हुई जब मुकेश ने यह इतालवी झूठ बोलने से इन्कार ही नहीं किया बल्कि इसकी बाकायदा शिकायत भी एन.आई.ई. न्यायालय जयपुर में दर्ज करवाई जो अभी तक विचारार्थ लम्बित है ।

लेकिन 2013 तक आते आते एन.आई.ए. के इस इतालवी झूठ की पर्तें उसी के एक पात्र भवेश पटेल ने खोल दीं। एन.आई.ए. ने इस पटेल का नाम अजमेर दरगाह विस्फोट में दर्ज करके इसे भगौडा घोषित कर रखा था। लेकिन पटेल का कहना है कि वह भगौडा बिलकुल नहीं था, बल्कि एक पूर्व युवा कांग्रेस नेता प्रमोद त्यागी के आश्रम में रह रहा था और बाकायदा सोनिया गान्धी की पार्टी के नेता दिग्विजय सिंह व केन्द्रीय गृह मंत्री सुशील कुमार शिन्दे के सम्पर्क में था। पटेल को कहा गया कि हिंसात्मक गतिविधियों में वह मोहन भागवत एवं इन्द्रेश कुमार का नाम ले दे तो वित्तीय सहायता के साथ उसे गिरफ्तारी के बाद जमानत पर रिहा भी करवा लिया जायेगा। लेकिन जब पटेल ने भारी दबाव के बावजूद सक्षम अधिकारी के सामने मोहन भागवत और इन्द्रेश कुमार का नाम नहीं लिया तो एन.आई.ए. ने अपना सारा गुस्सा पटेल पर निकालना शुरु किया। अपने प्राणों पर आये इस खतरे को देखते हुये पटेल ने एन.आई.ए. के विशेष न्यायालय को जाँच एजेंसी की कार्यप्रणाली का सारा कच्चा चिठ्ठा खोलते हुए पत्र ही नहीं लिखा बल्कि अपनी जान की रक्षा के लिये भी गुहार लगाई। यह अभियोग भी अभी तक लम्बित है।

दरअसल सी.बी.आई. और एन.आई.ए. लम्बे समय से हिंसात्मक गतिविधियों में संघ का नाम जोड़ने के प्रयासों में लगी हुई है। इसके बावजूद वह किसी भी घटना को लेकर न्यायालय में दाखिल किये गये आरोप पत्रों में संघ के किसी भी अधिकारी का नाम जोड़ नहीं सकी है। लेकिन पिछले दिनों राहुल गान्धी द्वारा एक टी. वी. न्यूज चौनल को दिये गये इन्ट्रव्यू से हुई क्षतिपूर्ति की भरपाई करने के लिये एक बार फिर सोनिया गान्धी की पार्टी के लिये जरूरी हो गया था कि संघ का नाम हिंसात्मक गतिविधियों में पुनः प्रचारित किया जाये। दरअसल अपने इस इन्ट्रव्यू में राहुल गान्धी ने यह मान लिया था कि दिल्ली में 1984 में सिक्खों के हुए नरसंहार में कुछ कांग्रेसियों का हाथ हो सकता है। जाहिर है चाहे अनजाने में ही की गई, राहुल गान्धी की इस स्वीकारोक्ति से सोनिया गान्धी की पार्टी के राजनैतिक तौर तरीकों और उसकी कार्यप्रणाली का पर्दाफाश हो गया था। पार्टी का असली चेहरा सबके सामने आ गया था। राजीव गान्धी के इस गूढ़ वाक्य की कि जब कोई बड़ा वृक्ष गिरता है तो धरती हिलती ही है, पर से पहली बार पर्दा हटा था और अन्दर का खूनी सच सब ने देख लिया था। राहुल गान्धी के इस सच से जो क्षति पार्टी को हो रही थी, उसकी भरपाई करने के लिये तुरन्त वही पुराना हथकंडा अपनाया गया। किसी भी तरीके से लोगों का ध्यान 1984 के इस सच से हटाया जाये। इसके लिये भला संघ से आसान शिकार और कौन हो सकता था? चुने हुए मीडिया की सहायता से इतालवी झूठ का कारवाँ मोर्चे पर उतारा गया।

संघ को हिंसात्मक गतिविधियों से जोड़ने के लिये स्वामी असीमानन्द के नाम का प्रयोग करने के पीछे भी सोनिया गान्धी की पार्टी शायद एक तीर से दो शिकार करना चाहती है। पहला शिकार तो संघ ही है जो आज देश में राष्ट्रवादी चेतना का प्रतीक बन गया है और दूसरा शिकार स्वयं स्वामी असीमानन्द हो सकते हैं। चर्च द्वारा भारतकोश जनजातिय क्षेत्रों को मतान्तरित करने के आन्दोलन के रास्ते में स्वामी असीमानन्द पिछले लम्बे अरसे से, रुकावट बने हुए थे। इस प्रकार की दूसरी दो रुकावटों को पहले ही दूर किया जा चुका है। त्रिपुरा में स्वामी शान्ति काली जी महाराज और ओडीशा में स्वामी लक्ष्मणानन्द को को ईसाई मिशनरियां अपने अन्य सहायकों की सहायता से पहले ही रास्ते से हटा चुकीं हैं। अभी तक उनके असली हत्यारे पकड़े नहीं जा सके हैं। इन में स्वामी असीमानन्द जी ही जीवित बचे थे। इन्हें अब चर्च

शेष पृष्ठ 23 पर.....

गृहस्थ आश्रम की नींव

-डॉ. उषा खोसला

धर्म पर खड़ी है गृहस्थाश्रम की नींव। गृहस्थ में धर्म और मानवता के मूल्यों का अभाव होने से उसका आधार दुर्बल होता है तथा गृहस्थ में शांति, समृद्धि तथा प्रेम का अभाव होता है। धर्म के अभाव में कलह-क्लेश तथा तरह-तरह के रोगों का जन्म होने से वातावरण नकारात्मक ऊर्जा से भरा रहता है। नकारात्मक ऊर्जा के कारण आनन्द, प्रसन्नता, मुस्कुराहट समाप्त हो जाती है। तत्ववेत्ताओं तथा हमारे शास्त्रों ने भी जीवन के चार स्तम्भों धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष का वर्णन किया है। धर्म ही तो प्रथम स्तम्भ है जो मनुष्य के लिये मोक्ष का द्वार खोलता है। अर्थोपार्जन भी धर्म के विकास के लिये होना चाहिये। पवित्र अर्थ द्वारा संसार संबंधी इच्छायें पूर्ण करने के पश्चात् भी मनुष्य आत्म विकास के मार्ग पर आगे बढ़ता ही जाता है। क्योंकि इच्छायें भी राजसिक तथा तामसिक न होकर सात्विक बन जाती हैं। सात्विक मार्ग पर आगे चलकर जीव निष्काम कर्मयोगी बन कर मोक्ष की प्राप्ति करेगा।

विद्वानों ने गृहस्थ आश्रम को सबसे महत्त्वपूर्ण कहा है क्योंकि इस आश्रम में रहकर मनुष्य सांसारिक कर्तव्यों का पालन करता हुआ मोक्षगामी बनता है। संन्यासी के लिये सांसारिक कर्तव्यों का पालन अपेक्षित नहीं है। सम्प्रति गृहस्थ आश्रम में विकृति आ गई है। परिवार के सदस्य परस्पर टकरा रहे हैं। पति का अहंकार पत्नी के अहंकार से, सास का बहु से, भाई का भाई से, बहन का भाई से, बेटे का पिता से। सब अपने-अपने हिसाब से चलना चाहते हैं। एक-दूसरे की राय में सहमति नहीं है। सहनशक्ति नहीं रही। कर्तव्यपालन नहीं रहा। सम्मान आदर का भाव नहीं। संवदेनशीलता नहीं रही। कारण मनुष्य भोगवादी तथा मायावादी बनता जा रहा है। भोगवासना तथा अहंकार का पर्दा इतना गहन हो चुका है कि मनुष्य यह जान ही नहीं पा रहा है कि आखिर वो कहाँ गलत हो गया? धर्म को धारण करने से मनुष्य सात्विक तत्व से जुड़ा रहता है। यही वह साधन है जो बुद्धि में विवेक को जगाता है। विवेक युक्त बुद्धि भगवत तत्व से जुड़ी रहती है। ऐसी बुद्धि के निर्णय भी शुद्ध होते हैं। ऐसी सात्विक बुद्धि के स्वामी के शरीर तथा मन से सात्विक तरंगे निकलती है जो पूरे वातावरण को शुद्ध, शांत तथा प्रसन्न रखती है। सात्विक कृत्य ही मनुष्य को अध्यात्मिक दृष्टि प्रदान करते हैं।

गृहस्थ आश्रम की नींव धार्मिक न होकर तमोगुणी तथा रजोगुणी बन चुकी है। जीवन में मनुष्य गीता, गायत्री, गाय, गंगा का महत्त्व भूल चुका है। जीवन से तीर्थ, व्रत, तप, दान, पवित्रता समाप्त होती जा रही है। सतशास्त्रों तथा सद्गुरुओं पर श्रद्धा नहीं रही। इन्द्रिय लोलुपता ने मनुष्य को कहीं का नहीं छोड़ा। माता-पिता ही संस्कारित नहीं है तो वे अपनी संतति को क्या संस्कार देंगे। न गृहस्थ में संस्कारों का पोषण हो पा रहा नही विद्यालयों में। शिक्षा की पद्धति बिगड़ चुकी है। पाठ्यक्रम की पुस्तकों के साथ-साथ धार्मिक शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिये। एक बार बच्चा परिपक्व हो गया तो वह धार्मिक शिक्षा और मानवता के मूल्यों को नहीं समझ सकता। बच्चे के कोमल हृदय में ही संस्कार देने पड़ते है यदि बचपन से ही उसमें धार्मिक संस्कारों का सिंचन किया जाय तो वह जीवन-पर्यन्त धार्मिक रहेगा। यदि कोमल हृदय में तमोगुण रजोगुण का विषाक्त तत्व भरा जायेगा तो वह जीवन भर इससे बाहर नहीं निकल पायेगा।

समाज तथा परिवार बुराईयों से भरता जा रहा है। बुराईयों को मिटाने के साधन उपलब्ध हैं लेकिन साधनों से मनुष्य लाभान्वित नहीं हो पा रहा। भौतिकवाद के बोलबाले ने मनुष्य की श्रद्धा को डाँवाडोल कर दिया है। परिवार तथा समाज स्वयं को असुरक्षित तथा भयभीत अनुभव कर रहा है। भविष्य की चिन्ता दिन-रात सता रही है। यह है प्रकृति के नियम से कटकर जीवन जीने का परिणाम। फिर धन, पद तथा प्रतिष्ठा का आश्रय ढूंढता है। सोचता है कि शायद ऐसे मैं सुरक्षित हो जाऊँगा। इस भ्रम में जीवन बिता देता है।

भौतिक जगत को कसकर पकड़ लेनेके प्रयत्न में समाज तथा परिवार की मर्यादाओं को भंग करता एवं स्वार्थ सिद्धि ही जीवन का लक्ष्य बन जाती है। गृहस्थ आश्रम ही तो भगवान का प्रथम मंदिर है। जिसने जीवन के मूल्यों को समझा और इन मूल्यों को जीवन में उतारने में सफल हो गया है, उसे भगवान को ढूंढने के लिये किसी तीर्थ तथा आश्रम में नहीं जाना पड़ता। माता-पिता ही तो दिव्य तीर्थ हैं। उनकी सेवा से तो तीर्थ यात्रा से भी कई गुना अधिक दिव्य फल प्राप्त होता है।

आज समाज में किस प्रकार से वृद्धों को निराश्रित छोड़ दिया जाता है। जिन माता-पिता ने अपने त्याग और प्रेम से बच्चों को पालन पोषण किया, शिक्षित कर सुयोग्य बनाया आज उनकी अपनी ही सन्तानों द्वारा उनकी कैसी दुर्गती हो रही है। बहु को अपनी सास में अपनी माँ के दर्शन तथा सास को बहु में अपनी बेटी नहीं दिखती है। संस्कारों के अभाव और भटकाव के कारण ऐसा हो रहा है। यही संस्कृति का प्रदूषण एवं सभ्यता में व्याप्त पतन एवं अधर्म के मार्ग की ओर चलना। मनुष्य स्वयं ही अपना शत्रु बन गया है। मनुष्य अपने जीवन में प्रसन्नता और शांति चाहता ही नहीं। जीवन तो आनन्द की प्राप्ति के लिये मिला है। लेकिन मनुष्य तो विषय भोगों में ही उलझ कर रह गया। माया के जगत को ही सब कुछ समझने के कारण आत्मा तथा परमात्मा संबंधी ज्ञान प्राप्त करना असम्भव है।

सात्विक सोच विचार से सात्विक जीवन शैली निर्माण होगी और पूरा परिवार ही सात्विक बन जायेगा। यही गृहस्थाश्रम की शक्तिशाली एवं सुन्दर नींव है। यही सुख और शांति का मार्ग है। इसी जीवन शैली की समाज, राष्ट्र तथा विश्व को आवश्यकता है। ऐसे श्रेष्ठ परिवार के कारण ही विवाह विच्छेद समाप्त हो जायेंगे। बच्चे नशीले पदार्थ का शिकार नहीं होंगे। आत्महत्यायें बन्द हो जायेंगी। यदि जीवन धार्मिक बन जाये तो बच्चे हिंसक न बनकर सदाचारी बनेंगे।

यदि समाज ऋषि परम्परा के सिद्धान्तों को जीवन में उतार ले तो पापाचार, दुराचार, दंगे फसाद, अत्याचार, हिंसा, नशाखोरी सब समाप्त हो जायेंगे। ऋषि परम्परा ने समाज को धर्म से जोड़ने की शिक्षा दी। उन सिद्धान्तों को भूलने के कारण मनुष्य दम्भी, पाखण्डी, प्रमादी और आलसी बनने के कारण दूसरों के हितों की रक्षा करना ही भूल गया। यदि मनुष्य अच्छा करेगा तो बदले में अच्छा ही मिलेगा और यदि बुरा करेगा तो बुरा ही प्राप्त होगा। कार्य कभी भी कारण के बिना नहीं होता। आज मनुष्य दुखी है तो अपना ही बोया हुआ पाप कर्म है जो वह करके भूल गया है। लेकिन परमात्मा के यहाँ गणित में कभी भी भूल चूक नहीं होती।

एक मनुष्य को देखकर दूसरे में परिवर्तन होता है। यदि समाज के अधिक लोगों की प्रवृत्ति सात्विक कर्म में होगी और उनमें मानवता के गुण विकसित होंगे तो उनको देखकर शेष लोगों की प्रवृत्ति भी शुभ कर्मों में होगी और चारों ओर मंगल ही मंगल घटित होगा। किन्तु आज चारों ओर अमंगल ही अमंगल देखा जा रहा है क्योंकि समाज का अधिक भाग तमोगुणी प्रवृत्ति का हो चुका है। परिवार के स्तर पर भी यदि माता-पिता धर्म संबंधी कार्यों में प्रवृत्त होंगे तो उन्हें देखकर बच्चे भी उनका अनुकरण, अनुशरण करेंगे और धर्म में रुचि की भी वृद्धि होगी। गृहस्थ की नींव भी दृढ़ होगी। मानवता के गुणों का विकास करने में रुचि होने से समाज का चित्र ही बदल जायेगा।

हैवर्ड, सी.ए. 94544, यू.एस.ए.

.....पृष्ठ 21 का शेष

ने सोनिया गान्धी की पार्टी की सरकार की सहायता से घेर रखा है। यदि कारवाँ के इस दावे को क्षण भर के लिये सच मान लिया जाये कि उनके लोग इतनी जबरदस्त सुरक्षा व्यवस्था के बावजूद जेल में उनके निकट पहुंचते रहे हैं तो जाहिर है, उनकी तथाकथित उपयोगिता समाप्त हो जाने पर उनकी हत्या भी हो सकती है। मोहन भागवत का नाम हिंसात्मक गतिविधियों की स्वीकृति में उछालना तो महज राजनैतिक चाल हो सकती है लेकिन स्वामी जी की जान को खतरे से अंदाजा लगाया जा सकता है कि भारत विरोधी शक्तियों की घुसपैठ सोनिया गान्धी की पार्टी की सरकार में कितनी गहरी हो गई है। रिकार्ड के लिये बता दिया जाये कि स्वामी असीमानन्द ने कारवाँ के इस इतालवी झूठ का पर्दाफाश करते हुए **एक बयान जारी किया है कि कारवाँ को उन्होंने कोई साक्षात्कार नहीं दिया और उनके नाम पर गलत बयानी की जा रही है।** ❑

१९८४ के दोषियों को दण्डित करो

-सरदार गुरचरन सिंह गिल

नई दिल्ली। 11 फरवरी 2014, राष्ट्रीय सिख संगत दिल्ली प्रदेश की ओर से 1984 में हुए सिखों के नरसंहार के विरोध में एक धरना जंतर-मंतर पर दिया गया। राष्ट्रीय सिख संगत राष्ट्रीय अध्यक्ष स. गुरचरन सिंह गिल के नेतृत्व में दिल्ली के अनेक बंधुओं ने इसमें भाग लिया। स. गिल जी ने कहा कि ये दुर्घटना भारत के लिए एक कलंक है एवं इसकी जितनी भर्त्सना की जाए कम है। 1984 से लेकर अब तक इस कत्लेआम के दोषी खुलेआम घूम रहे हैं व कोई दण्ड नहीं दिया गया। हम कांग्रेस सरकार से मांग करते हैं कि दोषियों को जल्दी से जल्दी दण्डित किया जाए व जैसा कि श्री राहुल गांधी ने अपने साक्षात्कार में कहा है कि कुछ कांग्रेसी इस हत्याकाण्ड में लिप्त थे उनके नामों का खुलासा किया जाए। हम चैन से बैठने वाले नहीं है व इस जघन्य अपराध के लिए दोषियों को फांसी पर लटकाया जाए। श्री देवेन्दर सिंह गुजराल जी ने कहा कि राष्ट्रीय सिख संगत दिल्ली प्रदेश सदैव इस क्रूर हत्याकाण्ड के विरुद्ध दोषियों को दण्ड देने के लिए आवाज उठाता रहा है व आगे भी

अपना अभियान जारी रखेगा। श्री आर.पी.सिंह ने कहा कि हम सदैव ही इस दिशा में न्याय की मांग करते आए हैं व कोई सुनवाई नहीं हुई। हम अपना संघर्ष जारी रखेंगे। कांग्रेस सरकार को हटाकर ही दम लेंगे। ताकि दोषियों को उचित सजा दी जा सके। श्री अविनाश जायसवाल जी ने कहा कि राष्ट्रीय सिख संगत इस जघन्य अपराध के लिए कठोर दण्ड देने के लिए सदैव संघर्षरत रहेगी। इसके अतिरिक्त दिल्ली प्रदेश महामंत्री स. महिन्दर सिंह बालीएवं अन्य अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने धरने में भाग लिया।

धरने के उपरान्त राष्ट्रीय सिख संगत के राष्ट्रीय अध्यक्ष स. गुरचरन सिंह गिल एवं दिल्ली प्रदेश के प्रधान स. देवेन्दर सिंह गुजराल के नेतृत्व में एक शिष्ट मण्डल राष्ट्रीय सिख संगत की ओर से एक ज्ञापन राष्ट्रपति महोदय को राष्ट्रपति भवन में दिया गया। जिसमें 1984 के सिख कत्लेआम के पीड़ित परिवारों के लिए न्याय एवं दोषियों को दण्डित करने के लिए मांग की गई।

प्रेषक : **वीरेन्दर सिंह भंडारी**

ललकार

हिन्दू हैं हिन्दोस्थानी है, यह हिन्दोस्थान हमारा है।
हम ही ने अपने तपबल और बलिदानों से इसे संवारा है।।

यह धर्म क्षेत्र है कर्म क्षेत्र, ऋषियों की तपोभूमि यह है।
शिवि-दधीचि-हरिश्चन्द-मोरध्वज की पुण्य भूमि यह है।।

हम उस सत पथ के राही हैं, जो सम्पूर्ण समग्र कहाता है।
पवित्र-अपवित्र नद नालों को पा, जो कभी नहीं घबराता है।।

सत्य सनातन धर्म हमारा, सबको पावन कर देता है।
ज्यों क्षीर नीर को पाकर के, गुण अपना उसमें भर देता है।।

सभी सुखी समृद्ध रहें, सब बँधें प्रेम के बन्धन में।
शुभ भाव बसें हिन्दू जन में, ज्यों सुगन्ध बसै है चन्दन में।।

करते हैं मान सब धर्मों का, हित सब धर्मों का चाहत हैं।
कुछ कुटिल कुचाली पंथों की, विद्रोही नीति से आहत हैं।।

हम ललकार उन्हें समझाते हैं, मतकायर समझो हिन्दू को।
जाति-धर्म-पंथ प्रथा में, मतबांटो सतधर्मी हिन्दू को।।

आघात न और सहन होगा, सब्र का बांध टूटने वाला है।
हिन्दू विरोधी तत्वों को, अब काल कूटने वाला है।।

रचयिता : **दण्डी स्वामी मोमलदेव आश्रम**
द्वारा-पूजा सामग्री भण्डार
एम-24, शास्त्री नगर, दिल्ली-52

❑

मैं भारत हूँ

कभी शेरों से खेला था मैं, यहीं इसी सरजमी पर
भारत बनाने को खोल कर जबड़ा दाँत गिनता था
मैने किया है युगों और सदियों का सफर, व्यथित हृदय से
सही है मुगलों और इंगलों की हजार साल गुलामी
मैंने झेला है अपने अंगों के कटने का असीम शूल
आप सकबे रहते पूरब-पश्चिम कट कर पाक बन गये
भरत था, भारत हूँ।
हर समय, हर दम हम लड़े थे मिलकर लड़े थे
आज भी लड़ रहे हैं, अपनों से अपनों में बंटकर
सोचता हूँ मैं कहां हूँ? भारत कहां है?
मैं आज गौण हो गया हूँ, अनुपयोगी हो गया हूँ?
ढल रही पीढ़ियों ने क्या किया? आप को क्या दिया?
क्यों सोच रहे हो, मेरे लिए आप क्या कर रहे हो?
भरत था, भारत हूँ।
शेर बन कर शेरों के दाँत गिनने का काम आप पर आया है
अग्नि वाण बनकर समर में कूदने जूझने का समय आया है
जिस वाण ने स्वर्णमयी लंका को जलाकर खाक कर दिया
लाक्षाग्रह की आग ने महाभारत खड़ा कर दिया
जली हुई ट्रेन ने गोधरा में काम तमाम कर दिया
केवल भरत खड़े हो जाओ, आओ आकर बचा लो मुझे
भरत या भारत हूँ
जो मरने को नहीं मारने को तत्पर रह सके
जहर उगलने वाले नागों के सर कुचल सके
ऐसा कुछ करो सिंह पुत्रों भारत फिर भरत का बल सके
भरत था, भारत हूँ।

लेखक : **रामकृष्ण श्रीवास्तव**
महामंत्री, इन्द्रप्रस्थ विश्व हिन्दू परिषद

सम्पादक के नाम

लोकतंत्र पर मुस्लिम वोट बैंक भारी

देश में जब भी लोकसभा, विधानसभा या नगर निगम के चुनाव होते है तो प्राय: सभी राजनैतिक दल एकमुश्त मुस्लिम वोटों को पाने के लिए विभिन्न प्रकार की घोषणाएं करते हैं तथा वर्तमान सरकारें चाहे वह केन्द्र सरकार हो या राज्य सरकार वह भी विभिन्न योजनाओं द्वारा मुसलमानों को आर्थिक व अन्य प्रकार से लाभान्वित करने में जुट जाती है। मुस्लिम समाज भी अपनी एकजुट वोटों का दबाव बनाकर अपनी जायज-नाजायाज मांगें लेकर सभी दलों पर दबाव बनाते हैं। उनकी ये मांगे राष्ट्रहित को लेकर नहीं होती। उनकी मांगे केवल मुस्लिम समाज से जुड़ी होती है। सत्ताधारी दल तथा अन्य राजनैतिक दल भी एकमुश्त मुस्लिम वोट पाने के लालच में इनकी मांगों को मानने के लिए तत्पर रहते है।

मुस्लिम समाज की हमेशा से सोच रही है कि **'जिसकी जितनी संख्या भारी, राजनीति में उसकी उतनी हिस्सेदारी'**। इसलिए मुस्लिम अपनी जनसंख्या में लगातार वृद्धि किये जा रहे है। मुस्लिम समाज के नेता हमेशा राजनीति में अपनी जनसंख्या के अनुपात में हिस्सेदारी तथा मुसलमानों के लिए विशेषाधिकारों की मांग करते हैं। आज हर राजनैतिक दल में मुस्लिम सामज के नेता मौजूद है और हर नेता की मुस्लिम समाज के लिए अपनी एक अलग मांग होती है। इसके अतिरिक्त देश में विभिन्न मुस्लिम संगठन तथा उनके पैरोकार तथाकथित मानवाधिकारवादी संगठन एवं गैर सरकारी संगठन (एन.जी.ओ.) भी मौजूद है जिनकी मुस्लिम नेताओं की मांगों के अतिरिक्त भी मांगें होती है।

आज देश विभिन्न समस्याओं से जूझ रहा हैं, पाकिस्तान द्वारा जिहाद के नाम लगातार छद्मयुद्ध जारी है। सीमाओं पर वे जवानों के सिर काटे जा रहे है, निर्दोष नागरिक मारे जा रहे हैं, आतंकवादी घुसपैठ जारी है, नकली नोटों द्वारा हमारी अर्थव्यवस्था ठप की जा रही है। बंगलादेश से अवैध रुप से मुस्लिम घुसपैठ पिछले 60 वर्षों से निरन्तर जारी है, जिसके कारण असम आदि पूर्वोत्तर क्षेत्रों में मुस्लिम जनसंख्या विस्फो की भयानक स्थिति पैदा हो गई है। चीन बार-बार भारतीय सीमा का अतिक्रमण कर रहा है, लद्दाख

शेष पृष्ठ 26 पर.....

विश्व में हिन्दुओं के विरुद्ध अनिष्टकारी षडयंत्र

-श्री आनन्द शंकर पंड्या, मुबई

जैन शब्द जिन आचार्य के अहिंसा सिद्धांत पर आधारित अत्यन्त पवित्र भाव का प्रसारक और लोकमान्य शब्द है। जैन को धर्म कहकर लोग धर्म की व्याप्ति को ही छोटी करने का दुराग्रह कर, जैन को जो सम्प्रदाय या समूह का वाचक है, उसे धर्म निरूपित करने का ही प्रयास करते हैं, जहाँ तक प्रश्न अल्पसंख्यक का है, वह भारत के संविधान में मुस्लिम और ईसाई समुदाय के लिए ही अभिहित है। जैन-बौद्ध यदि अपने आपको हिन्दू से कहीं पृथक मानते हैं तो वे केवल अपने दार्शनिक मान्यताओं के कारण ही। न्याय दर्शन, सांख्य दर्शन, योग दर्शन, वैशेषिक दर्शन, वेदान्त दर्शन की भाँति जैन और बौद्ध दर्शन भी मान्यता प्राप्त दर्शन है अत: ईश्वर, जगत, लोक-परलोक पुनर्जन्म-पूर्वजन्म-कर्म सिद्धान्त की मान्यता इन दर्शनों में भी है। अंग्रेजों की फूट डालो और राज करो की दुर्गुति के कारण स्वतंत्र भारत के राजकर्ताओं ने उसी दुर्गुति का आश्रय लेकर और संवैधानिक अल्पसंख्यक शब्द का दुरुपयोग किया और समप्रदाय शब्द की संकीर्णतामूलक व्याप्ति को धर्मनिरूपित करने का प्रयास किया तथा अल्पसंख्यकों (मुसलमान और ईसाई) को सुविााओं का लालच देकर एक बड़े वर्ग से (हिन्दू से) जैन, बौद्ध, सिख जैसे हिन्दू समाज के अभिन्न अंग को अलग करने का प्रयत्न किया। सामान्य जनों की समझ, शिक्षा के अभाव में इतनी विकसित नहीं हो सकी कि वे सम्प्रदाय-अल्पसंख्यक और धर्म के अन्तर को समझ सकें, उन्हें तो राज्याश्रय और शासन द्वारा समुदाय विशेष को दी जाने वाली सुविधाएं ही समझ आती रही और वे अपने को अल्पसंख्यक के घेरे में लाने हेतु लालायित रहे तथा अपनी संकीर्ण मांगों के प्रति आग्रही और अडिग रहे तथा अल्पसंख्यक का दर्जा प्राप्त करने को उत्सुक हैं। केवल आबादी के आधार पर जनसांख्यजन अल्पसंख्य भारत के संविधान में अभिहित अल्पसंख्यक की व्याख्या नहीं हो सकती अत: जैन समुदाय या अन्य किसी अल्पसंख्या वाले समूह को संवैधानिक अल्पसंख्यक नहीं माना जाना चाहिए, यह मेरा सुनिश्चित मत एवं विनम्र आगह भी। जैन-बौद्ध, सिख अथवा भारत में जन्मे किसी भी सम्प्रदाय में यह भ्रम ने फैले हम बहुत दुर्बल हैं (केवल संख्या के आधार पर) अन्यथा साम्प्रदायिक आग्रह (दूसरे शब्दों में दुराग्रह) धर्म की व्याप्ति छोटी करने का प्रयास मात्र होगा। सम्प्रदाय छोटे हो सकते हैं, किन्तु धर्म नहीं, प्रत्येक सम्प्रदाय के बीज हम धर्म में खोज सकते हैं, क्योंकि धर्म से ही सम्प्रदायों को पोषक तत्व मिलते हैं न कि सम्प्रदाय से धर्म को, उदाहरणार्थ-धृति, क्षमा, दमख अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, घी:, विद्या, सत्य, अक्रोध इत्यादि ये ही वे पोषक तत्व हैं, जो सम्प्रदायों को पोषण प्रदान करते हैं।

हमें सुविधाएं राज्य या शासनकर्ताओं से नहीं, बल्कि अपने पौरुष या पुरुषार्थ से ही प्राप्त करनी चाहिए। स्वयमेव मृगेन्द्रता-किसी व्यक्ति के अन्दर छिपी प्रतिभा का विकास साधनों-सुविधाओं के अभाव में रुकता है, यह सत्य है किन्तु शताब्दियों से स्थापित तथ्यों की उपेक्षा करके सुविधाएं या शासकों की सहानुभूति बटोरना न्याय व तर्कसंगत नहीं होगा। पीड़ा इस बात की है कि हम जाने-अनजाने में ही दुर्बल होकर, राष्ट्रीय एकात्मता तथा सामाजिक समरसता की ही हानि कर रहे हैं। ❑

.....पृष्ठ 25 का शेष

में जब चाहे तब तंबू गाड़ देता है। पूर्वोत्तर भारत में मेघालय, मणिपुर, नागालैण्ड, मिजोरम, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश तथा छत्तीसगढ़ में माओवादी व नक्सली आतंकवादियों द्वारा नित प्रतिदिन हमारे सुरक्षाबलों व नागरिकों को मारा जा रहा है। ऐसी ही अनेक समस्याओं से देश घिरा हुआ है परन्तु हिन्दुवादी और राष्ट्रवादी संगठनों को छोड़कर कोई भी मुस्लिम संगठन, मानवाधिकारवादी संगठन या अन्य गैर सरकारी संगठन इनके विरुद्ध कोई आवाज नहीं उठाता।

ऐसी परिस्थिति में क्या यह सम्भव है कि हम अपने लोकतंत्र की रक्षा केवल मुस्लिम वोटों के आधार पर कर पायेंगे? शायद नहीं।

विनोद कुमार सर्वोदय
नयागंज, गाजियाबाद (उ.प्र.)